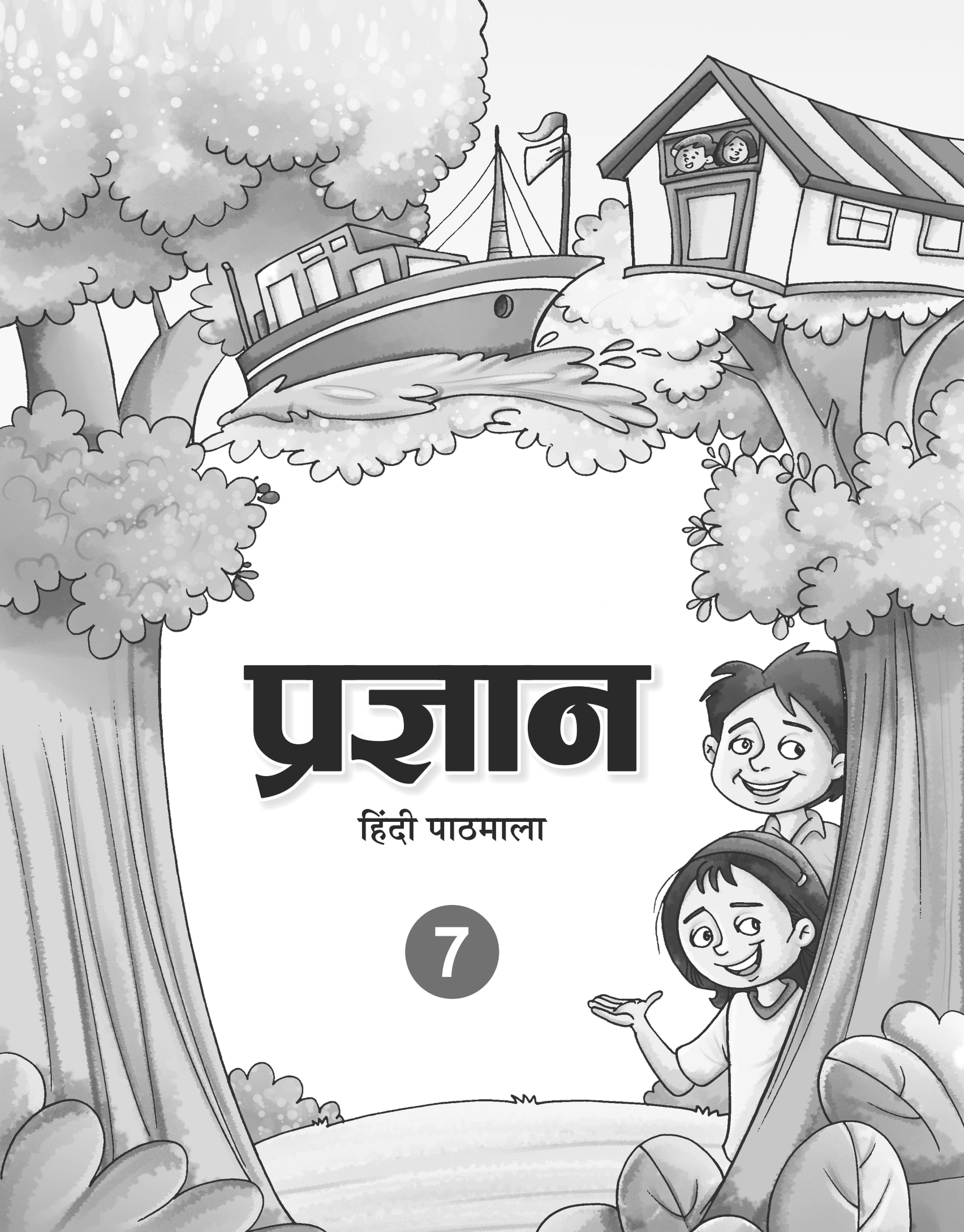

प्रज्ञान

हिंदी पाठमाला

7

1. भोर और बरखा

❐ अभ्यास

1. (क) (ii) दरवाजे पर (ख) (iii) दही मथ रही हैं
(ग) (iii) कोलाहल कर रहे हैं (घ) (i) गिरधर नागर
(ङ) (i) भगवान कृष्ण की

2. (क) सावन (ख) मनवा (ग) नागर (घ) बीती (ङ) सुनियत

3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (i)

4. (क) गोपियाँ दही मथ रही हैं।
(ख) गोपी के कंगन की झनकार की आवाज आ रही है।
(ग) गायों के रखवालों ने हाथ में माखन-रोटी लिया हुआ है।
(घ) जय-जय शब्द का उद्घोष ग्वाल-बाल कर रहा है।
(ङ) मीरा को सावन मन-भावन लगता है, क्योंकि सावन के आते ही उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक लग जाती है।

5. (क) यहाँ पर माता यशोदा श्रीकृष्ण को संबोधित करते हुए 'बंसीवारे ललना', 'मोरे प्यारे', 'लाल जी', उपर्युक्त कथन कहते हुए अपने पुत्र श्रीकृष्ण को जगाने का प्रयास कर रही हैं।
माता यशोदा श्रीकृष्ण को जगाने के अपने प्रयास में कृष्ण से निम्न बातें कहती हैं कि रात बीत चुकी है, सभी के दरवाजे खुल चुके हैं, देखो गोपियाँ दही बिलो कर तुम्हारा मनपसंद माखन निकाल रही हैं, द्वार पर देव और मानव सभी तुम्हारे दर्शन की प्रतीक्षा में खड़े हैं, तुम्हारे मित्रगण भी तुम्हारी जय-जयकार कर रहे हैं, सभी अपने हाथ में माखन रोटी लेकर गाय चराने के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अत: तुम जल्दी उठ जाओ।

(ख) दी गई पंक्तियों का अर्थ है कि यशोदा माता कृष्ण से कहती हैं कि हे गाय के रखवाली करने वाले कृष्ण तुम्हारे मित्र बाहर हाथ में रोटी और माखन लिए हुए हैं इसलिए तुम भी जल्दी जाग जाओ क्योंकि बाहर सभी ग्वाल-बाल तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(ग) ब्रज में भोर होते ही सभी घरों के किवाड़ खुल जाते हैं। गोपियाँ दही बिलोने लगती हैं उनके कंगन खनकने से पूरे वातावरण में मधुर संगीत गूँजने लगता है। ग्वाल-बाल गायों को चराने के लिए तैयार होने लगते हैं।

(घ) मीरा को सावन मनभावन इसलिए लगने लगा क्योंकि सावन का मौसम मीरा को श्रीकृष्ण की भनक अर्थात् श्रीकृष्ण के आने का अहसास कराता है। साथ ही इस समय प्रकृति भी बड़ी सुहावनी होती है।

(ङ) प्रस्तुत पद में सावन का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया गया है। सावन के महीने में मनभावन वर्षा हो रही है। बादल उमड़-घुमड़कर चारों दिशाओं में फैल जाते हैं। बिजली चमकने लगती है। वर्षा की झड़ी लग जाती है। वर्षा की नन्हीं-नन्हीं

बूँदें गिरने लगती हैं। पवन भी शीतल और सुहावनी हो जाती है। सावन का महीना मीरा को श्रीकृष्ण की भनक अर्थात् श्रीकृष्ण के आने का अहसास कराता है।

6. (क) 'गउवन के रखवारे' शब्द के लिए एक शब्द—गोपाला है।

(ख) **विशेषण पुनरुक्ति**

गरम-गरम — माँ ने गरम-गरम पकौड़े बनाए।
तरह-तरह — बगीचे में तरह-तरह के फूल खिले थे।
सुंदर-सुंदर — रमा ने सुंदर-सुंदर साड़ियों का चुनाव कर लिया।
मीठे-मीठे — शबरी ने मीठे-मीठे बेर राम को खिलाए।

संज्ञा पुनरुक्ति

गली-गली — नेताओं ने गली-गली में प्रचार शुरू कर दिया।
गाँव-गाँव — सरकार ने गाँव-गाँव में कुएँ खुदवाने का प्रस्ताव जारी किया।
बच्चा-बच्चा — मुहल्ले का बच्चा-बच्चा यह बात जान गया कि मंदिर में चोरी पुजारी ने की है।
वन-वन — राम, लक्ष्मण और सीता वनवास के समय वन-वन भटकते रहे।

(ग) **कारक**—'के' संबंध कारक।

(घ) माखन-रोटी में द्वंद्व समास है क्योंकि इसमें दोनों पद प्रधान हैं—माखन और रोटी।

(ङ) दामिन शब्द का अर्थ—बिजली।

(च) 'उमड़-घुमड़ चहुँदिस' में द्वंद्व समास है।

(छ) इस पंक्ति में मानवीय अलंकार है।

7. (क) मीरा का पावन प्रेम आज भी अमर है, क्योंकि वह अपने भक्ति और प्रेम में भगवान के प्रति समर्पित थीं, जिससे उनका प्रेम अद्‌भुत और अनन्त बन गया।

(ख) प्रकृति की सुंदरता और सावन का महीना प्रेम में एक विशेष अनुभव का अहसास कराते हैं। कविता में विरह और प्रेम की भावना सावन के मौसम में और भी गहरी होती है, जैसा कि प्राकृतिक सौंदर्य और मौसम की छवियों में देखा जा सकता है।

8. (क) (i) सुबह जगने के समय मुझे अच्छा लगता है कि मेरी माँ मेरे सामने हो।

(ii) यदि हमें छोटे भाई-बहन को जगाना पड़े तो प्यार से उनके सिर और बालों को सहलाते हुए जगाएँगे।

(iii) वर्षा में भीगना और खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

(ख) कृष्ण को गिरधर कहा गया है क्योंकि उन्होंने गोवर्धन पर्वत को अपनी उँगली पर उठाया था अर्थात् गिरि को धारण करने वाले। ❑

2. अपूर्व अनुभव

❐ अभ्यास

1. (क) (ii) तोत्तो-चान (ख) (iii) पोलियोग्रस्त (ग) (iii) ये दोनों
(घ) (i) तोत्तो-चान (ङ) (ii) यासुकी-चान

2. (क) पोलियो (ख) उत्तेजित (ग) उत्साह (घ) सूरज (ङ) रोई

3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) यासुकी-चान पहली बार पेड़ पर चढ़ रहा था।

(ख) यासुकी-चान को तोत्तो-चान पर पूरा भरोसा था।

(ग) तोत्तो-चान की हार्दिक इच्छा थी कि यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े।

(घ) तोत्तो-चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोन्बुत्सु जानेवाली सड़क के पास था।

(ङ) यासुकी-चान ने पेड़ पर चढ़कर दुनिया की एक नयी झलक देखी, जिसे उसने पहले कभी न देखा था। पेड़ मानो गीत गा रहे थे और दोनों बेहद खुश थे।

(च) यासुकी-चान को पोलियो था।

5. (क) यासुकी-चान तोत्तो-चान का प्रिय मित्र था। वह पोलियोग्रस्त था, इसलिए वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता था, जबकि जापान के शहर तोमोए में हर बच्चे का एक निजी पेड़ था, लेकिन यासुकी-चान ने शारीरिक अपंगता के कारण किसी पेड़ को निजी नहीं बनाया था। तोत्तो-चान की अपनी इच्छा थी कि वह यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर दुनिया की सारी चीजें दिखाए। यही कारण था कि उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया।

(ख) **तोत्तो-चान का अनुभव**—तोत्तो-चान स्वयं तो रोज ही अपने निजी पेड़ पर चढ़ती थी और खुश होती थी परंतु आज पोलियो से ग्रस्त अपने मित्र यासुकी-चान को पेड़ की द्विशाखा तक पहुँचाने से उसे प्रसन्नता के साथ-साथ अपूर्व आत्म-संतुष्टि भी प्राप्त हुई।

यासुकी-चान का अनुभव—यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। उसकी मन की इच्छा पूरी हो गई। उसने पेड़ पर चढ़कर दुनिया को निहारा।

(ग) 'यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह अंतिम मौका था' लेखिका ने ऐसा इसलिए लिखा क्योंकि यासुकी-चान पोलियो ग्रस्त था। उसके लिए पेड़ पर चढ़ पाना असंभव था। उसे आगे तोत्तो-चान जैसा मित्र मिल पाना मुश्किल था। तोत्तो-चान के अथक परिश्रम और साहस के बदौलत वह पहली बार पेड़ पर चढ़ पाया था। यह अवसर मिलना असंभव था। अगर उनके माता-पिता को

इसकी जानकारी मिल जाती तो वे यह काम कभी नहीं करने देते। शायद दोबारा ऐसा कभी नहीं कर पाते।

(घ) तोत्तो-चान ने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित किया था। यह बात उसने अपनी माँ से छिपाई थी क्योंकि उसे मालूम था कि माँ यह जोखिम भरा कार्य नहीं करने देगी। जब माँ ने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रही है तो उसने झूठ कहा कि वह यासुकी-चान से मिलने उसके घर जा रही है। यह कहते समय उसकी नजरें नीची थीं क्योंकि वह माँ से झूठ बोल रही थी। उसे डर था कि शायद वह माँ से नजरें मिलाकर जब यह बात कहेगी तो उसका झूठ पकड़ा जाएगा।

(ङ) निजी और सरकारी अस्पतालों, बस अड्डों, रेलवे स्थानकों, विमान तलों, शॉपिंग मॉल व मेट्रो रेल जैसे स्थानों में शारीरिक चुनौतियों से गुजरने वाले व्यक्तियों के लिए चढ़ने-उतरने के लिए विशेष रैंप और लिफ्ट की सुविधाएँ दी जाती हैं।

6. (क) **'आना' प्रत्यय से बनने वाले चार सार्थक शब्द**—घराना, चलाना, जुर्माना, रोजाना, शर्माना।

(ख) **कारक**—'के' संबंध कारक

(ग) यह वाक्य 'वर्तमान काल' में है तथा प्रश्नवाचक वाक्य है।

(घ) हुर्रे! विस्मयादिबोधक वाक्य है। यह वाक्य आनंद या जीत की खुशी को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है।

(ङ) **समुच्चयबोधक शब्द**—'कि'
संज्ञा—यासुकी-चान, सीढ़ी
सर्वनाम—वह
विशेषण—कमजोर

(च) गाल फुलाना मुहावरे का अर्थ है—रूठ जाना।

7. (क) जो लोग दूसरों को खुशी देकर खुश होते हैं वे नेक इंसान होते हैं, क्योंकि उन लोगों दृष्टिकोण सकारात्मक होती है और उन्हें दूसरों की खुशी में आनंद मिलता है। सुख-दुःख में सहानुभूति और समर्पण की भावना होती है, जिससे उन्हें अन्य लोगों के साथ संबंधों में आनंद मिलता है।

(ख) हाँ, मेरे विचार से भी साहस और दृढ़ निश्चय से असाध्य एवं कठिन कार्य भी पूर्ण हो जाते हैं क्योंकि साहस और दृढ़ निश्चय का संयोजन व्यक्ति को मनोबल, समर्पण और सहिष्णुता प्रदान करता है, जिससे वह असाध्य और कठिन कार्यों को पूरा करने के लिए सक्षम होता है।

8. (क) छात्र स्वयं करें।

(ख) छात्र स्वयं करें।

❑

3. मिठाईवाला

❐ अभ्यास

1. (क) (i) 2 पैसे में (ख) (i) 30-32 साल (ग) (iii) 57
(घ) (i) 2 पैसे (ङ) (ii) 1000 (च) (ii) 16
(छ) (iii) प्रतिष्ठित आदमी

2. (क) तर (ख) दया (ग) परिचित (घ) बेचता (ङ) सोने

3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (ii)

4. (क) रोहिणी चिक की आड़ से बोली।
(ख) चुन्नु ने घोड़ा लिया।
(ग) मिठाईवाले ने अतिशय गम्भीरता के साथ अपनी कहानी सुनायी।
(घ) मिठाईवाले ने पैसे लेने से इंकार कर दिया।
(ङ) मुरलीवाला कहता था, ''बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला।''

5. (क) मिठाईवाला अलग-अलग चीजें इसलिए बेचता था, क्योंकि वह बच्चों का सान्निध्य प्राप्त करना चाहता था। उसके बच्चों एवं पत्नी की मृत्यु असमय हो गई थी। वह अपने बच्चों की झलक इन गली के बच्चों में देखता था। इसलिए वह बच्चों की रुचि की चीजें बेचा करता था। वह बदल-बदल कर बच्चों की चीजें लाया करता था, इसलिए उसके आते ही बच्चे भी उसे घेर लिया करते थे। वह बच्चों की फरमाइशें पूरी करता रहता था। वह कई महीनों के बाद आता था क्योंकि उसे पैसों का कोई लालच नहीं था। इसके अलावा वह इन चीजों को तैयार करवाता था तथा बच्चों की उत्सुकता को बनाए रखना चाहता था।

(ख) मिठाईवाले का मधुर आवाज में गा-गाकर अपनी चीजों की विशेषताएँ बताना, बच्चों की मनपसंद चीजें लाना, कम दामों में बेचना, बच्चों से अपनत्व दर्शाना आदि ऐसी विशेषताएँ थीं। बच्चे तो बच्चे बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे।

(ग) एक ग्राहक के तौर पर विजय बाबू तर्क देते हैं कि दुकानदार को झूठ बोलने की आदत होती है। सबको एक ही भाव में सामान देता है और पहले अधिक तथा फिर कम दाम बताकर ग्राहक पर अहसान का बोझ डाल देता है।
एक विक्रेता के तौर पर मुरलीवाला तर्क देता है कि ग्राहक को सामान की असली लागत का पता नहीं होता है और दुकानदार हानि उठाकर भी सामान क्यों न बेचे पर ग्राहक को लगता है कि दुकानदार उसे ही लूट रहा है।

(घ) खिलौनेवाले के आने पर बच्चे खुश हो जाते थे। बच्चे अति उत्साहित हो जाते थे। उन्हें खेलकूद, अपने सामान, जूते-चप्पल आदि का ध्यान नहीं रहता। वे अपने-अपने घर से पैसे लाकर खिलौने का मोल-भाव करने लग जाते थे।

खिलौनेवाला उनका मनचाहा खिलौना दे देता था और बच्चे उन्हें लेकर काफी खुश हो जाते थे।

(ङ) रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण हो आया क्योंकि उसे वह आवाज जानी-पहचानी लगी। उसे स्मरण हो आया कि खिलौनेवाला भी इसी प्रकार मधुर कंठ से गाकर खिलौने बेचा करता था और इस मुरलीवाले का स्वर भी उसी तरह का था। ये भी ठीक वैसे ही मधुर आवाज में गा-गाकर मुरलियाँ बेच रहा था।

(च) रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था। इस पर उसने भावुक होकर बताया—मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित व्यापारी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे थे। मेरा वह सोने का संसार था। उसके पास सुख के सभी साधन थे। ईश्वर की लीला सभी को ले गई। उसने इन व्यवसायों को अपनाने के निम्नलिखित कारण बताए—

मैं इन व्यवसायों के माध्यम से अपने खोए बच्चों को खोजने निकला हूँ। इन हँसते-कूदते, उछलते तथा इठलाते बच्चों में अपने बच्चों की झलक देखता हूँ। इन वस्तुओं को बच्चों में बेचकर संतोष का अनुभव करता हूँ। बच्चों के चेहरे की खुशी देखकर मुझे असीम संतोष मिलता है।

(छ) 'अब इस बार ये पैसे न लूँगा'—कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि एक तो पहली बार किसी ने उसके प्रति इतनी आत्मीयता दिखाई और उसके दु:ख को समझने का प्रयास किया, दूसरा उसे रोहिणी के बच्चे चुन्नू-मुन्नु में अपने ही बच्चे नजर आए।

6. (क) (i) मिठाईवाला

'वाला' से पहले आने वाला शब्द संज्ञा है।

बोलनेवाली गुड़िया

बोलनेवाली—विशेषण शब्द है। गुड़िया शब्द संज्ञा है।

(ii) ऊपर वाले वाक्यांश में उनका प्रयोग किसी व्यक्ति और वस्तु के लिए हुआ है।

(ख) **कारक**—'ने' कर्त्ता कारक और 'की' संबंध कारक।

(ग) **काल**—भूतकाल।

(घ) (i) **संज्ञा**—मुरली, **विशेषण**—नारंगी रंग।

(ii) **संज्ञा**—मिठाईवाला।

(ङ) **सर्वनाम**—उसे

(च) **विशेषण**—दुबला-पतला गोरा

7. (क) यह कहानी हमें बताती है कि मानव जीवन में प्यार एक महत्त्वपूर्ण आधार है, जो हमें एक-दूसरे के साथ संबंध बनाए रखने की आवश्यकता को पूरा करता है। यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि मानवता में सच्चा प्यार और समर्थन

कितना महत्त्वपूर्ण है। प्यार हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग की आवश्यकता को समझाता है।

(ख) जीवन के लिए केवल धन ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सच्ची खुशी, समृद्धि और संतुलन के लिए आपके स्वास्थ्य, मानव संबंध और सामाजिक समृद्धि के महत्त्वपूर्ण होने पर भी विचार करना आवश्यक है। धन सिर्फ एक साधन है जो आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, लेकिन यह खुशहाल और पूर्ण जीवन की सामग्री नहीं है।

8. छात्र स्वयं करें।

❑

4. हम पंछी उन्मुक्त गगन के

❑ अभ्यास

1. (क) (iii) पंख टूट जाएँगे (ख) (iii) कटुक निबौरी
(ग) (ii) गति और उड़ान (घ) (i) अनार के दाने

2. (क) टहनी (ख) उड़ान (ग) टकराकर (घ) सपनों (ङ) नभ

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) कविता के अनुसार कनक-तीलियों से टकराकर पुलकित पंख टूट जाएँगे।
(ख) नीले नभ की सीमा पाने के लिए पंछी उड़ते हैं।
(ग) पंछियों की चोच लाल किरण-सी है।
(घ) "नीड़ न दो, चाहे टहनी का" अर्थात् पेड़ की टहनियों पर घोसले (नीड़) पंछियों को नहीं चाहिए।

5. (क) हर प्रकार की सुख-सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते, क्योंकि उन्हें वहाँ उड़ने की आजादी नहीं है। वे तो खुले आसमान में ऊँची उड़ान भरना, नदी-झरनों का बहता जल पीना, कड़वी निबौरियाँ खाना, पेड़ की ऊँची डाली पर झूलना, कूदना, फुदकना, अपनी पसंद के अनुसार अलग-अलग ऋतुओं में फलों के दाने चुगना और क्षितिज मिलन करना ही पसंद है। यही कारण है कि हर तरह की सुख-सुविधाओं को पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते।

(ख) पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी इन इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं—
(i) वे खुले आसमान में उड़ना चाहते हैं।
(ii) वे अपने गति से उड़ान भरना चाहते हैं।
(iii) नदी-झरनों का बहता जल पीना चाहते हैं।
(iv) नीम के पेड़ की कड़वी निबौरियाँ खाना चाहते हैं।
(v) पेड़ की सभी ऊँची फुनगी पर झूलना चाहते हैं।

(vi) वे आसमान में ऊँची उड़ान भरकर अनार के दानों रूपी तारों को चुगना चाहते हैं। क्षितिज मिलन करना चाहते हैं।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि पक्षी क्षितिज के अंत तक जाने की चाह रखते हैं, जो कि मुमकिन नहीं है परन्तु फिर भी क्षितिज को पाने के लिए पक्षी किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं यहाँ तक कि वे इसके लिए अपने प्राणों को भी न्योछावर कर सकते हैं।

(घ) (i) मेरे अनुसार पक्षियों को पालना बिल्कुल भी उचित नहीं है क्योंकि ईश्वर ने उन्हें उड़ने के लिए पंख दिए हैं, तो हमें उन्हें बंधन में रखना सर्वथा अनुचित है। अपनी इच्छा से ऊँची-से-ऊँची उड़ान भरना, पेड़ों पर घोंसले बनाकर रहना, नदी-झरनों का जल पीना, फल-फूल खाना ही उनकी स्वाभाविक पशु प्रवृत्ति है। आप किसी को भी कितना ही सुखी रखने का प्रयास करें परन्तु उसके स्वाभाविक परिवेश से अलग करना अनुचित ही माना जाएगा।

(ii) हमारे एक पड़ोसी ने तोता पाला था। वह पड़ोसी उसे मेले से खरीदकर लाया था। उसके परिवार के सभी सदस्य मन से उसकी देखरेख करते थे। प्रतिदिन उसके पिंजरे की सफाई करते थे। एक कटोरी में पीने के लिए पानी तथा खाने के लिए चना दिया जाता था। इसके अलावा तोते को मौसमी फल तथा मिर्च भी खाने को दी जाती थी। मेरा पड़ोसी उस तोते से घंटों बातें किया करता था और उसे पार्क में घुमाने ले जाया करता था। तोते ने घर के सभी सदस्यों के नाम रट लिए थे, लेकिन तोता भारी मन से खाना खाता था। जब मैं पड़ोसी के घर तोते के पिंजरे के पास जाता था तो वह हमारी ओर आशा भरी दृष्टि से देखता था।

(ङ) यह व्यक्ति के व्यक्तिगत मूल्यांकन और प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है। किसी के लिए स्वतंत्रता महत्त्वपूर्ण हो सकती है; क्योंकि इससे उसे अपने निर्णयों की स्वतंत्रता मिलती है, जबकि किसी को सुविधा और संपन्नता महत्त्वपूर्ण हो सकती है, क्योंकि ये उसे आराम और बेहतर जीवन प्रदान कर सकते हैं। लेकिन कविता के अनुसार पक्षी हम लोगों से यह प्रार्थना करते हैं कि उन्हें ईश्वर ने जब उड़ने के लिए पंख दिए हैं तो मानव उनकी उड़ान में विघ्न न डालें और उन्हें स्वतंत्र रूप से उड़ने दें।

6. (क) (i) कनक-तिलियाँ (ii) कटुक-निबौरी (iii) तारक-अनार

(ख) (i) दाल-रोटी—दाल और रोटी

(ii) अन्न-जल—अन्न और जल

(iii) सुबह-शाम—सुबह और शाम

(iv) पाप-पुण्य—पाप और पुण्य

(v) राम-लक्ष्मण—राम और लक्ष्मण

(vi) सुख-दुख—सुख और दुख

(vii) तन-मन—तन और मन
(viii) दिन-रात—दिन और रात
(ix) दूध-दही—दूध और दही
(x) कच्चा-पक्का—कच्चा और पक्का

(ग) **छिन्न-भिन्न करना मुहावरे का अर्थ**—टुकड़े-टुकड़े करना।
वाक्य-प्रयोग—ट्रेन की टक्कर से एक ट्रक छिन्न-भिन्न हो गया।

(घ) **पुलकित शब्द का अर्थ**—प्रेम, हर्ष आदि।

(ङ) इसमें उपमा अलंकार है।

7. (क) किसी भी जीव को कैद में रखना उचित नहीं हैं, क्योंकि इससे उसके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन हो सकता है। स्वतंत्र रहकर ही अपने सपने और अरमान पूरे किए जा सकते हैं। पराधीन रहने से किसी भी जीव को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। कवि ने इस कविता के माध्यम से स्वतंत्रता के महत्त्व को दर्शाया है। हमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि किसी भी जीव को कैद में नहीं रखना चाहिए।

(ख) व्यक्ति की स्वतंत्रता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह उसकी आत्म-समर्पण, निर्णय और व्यक्तिगत विकास की स्थापना करती है। हालाँकि आर्थिक सक्षमता की अवस्था में स्वतंत्रता को प्राप्त करना अधिक संभव हो सकता है क्योंकि इससे व्यक्ति आत्मनिर्भर हो जाता है।

8. (क) पक्षियों को पिंजरों में बंद करने से सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण में आहार शृंखला असंतुलित हो जाएगी। जैसे घास को छोटे कीट खाते हैं तो उन कीटों को पक्षी। यदि पक्षी न रहे तो इन कीटों की संख्या में वृद्धि हो जाएगी जो हमारी फसलों के लिए उचित नहीं है। इस कारण पर्यावरण असंतुलित हो जाएगा। जब पक्षी फलों का सेवन करते हैं तब बीजों को यहाँ-वहाँ गिरा देते हैं जिसके फलस्वरूप नए-नए पौधे पनपते हैं। कुछ पक्षी हमारी फैलाई गंदगी को खाते हैं जिससे पर्यावरण साफ रहता है यदि ये पक्षी नहीं रहेंगे तो पर्यावरण दूषित हो जाएगा और मानव कई बीमारियों से ग्रस्त हो जाएगा। अत: जिस प्रकार पर्यावरण जरूरी है, उसी प्रकार पक्षी भी जरूरी हैं।

(ख) (i) यह कहना गलत नहीं कि मानव की वर्तमान जीवन-शैली और शहरीकरण से जुड़ी योजनाएँ पक्षियों के लिए घातक हैं क्योंकि शहरों में औद्योगीकरण के कारण विषैली गैसें और प्रदूषित जल पक्षियों के लिए हानिकारक होता है। दूसरी ओर अधिक-से-अधिक भवन निर्माण के कारण वनों व हरियाली वाले इलाकों को काटकर बड़े-बड़े भवन बना दिए जाते हैं, जिससे पक्षियों का आश्रय स्थल समाप्त हो जाता है। साथ ही वृक्षों से प्राप्त खाद्य पदार्थ, फल-फूल आदि उन्हें नहीं मिल पाते। ऐसा होने पर उन्हें बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

पक्षियों से रहित वातावरण में आहार शृंखला प्रभावित हो जाएगी। पर्यावरण संतुलित नहीं रहेगा। इसके लिए हमें अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाने चाहिए व बाग-बगीचों का निर्माण करना चाहिए। फैक्ट्रियों को भी शहरों से दूर लगाकर धुएँ व प्रदूषित जल हेतु उचित प्रबंध करने चाहिए। (**नोट**—इन्हीं विचारों के आधार पर वाद-विवाद कीजिए)।

(ii) यदि हमारे घर में किसी पक्षी ने अपना घोंसला बनाया हो और किसी कारणवश हमें घर बदलना पड़ रहा हो, तो हम प्रयास करेंगे कि जब तक घोंसलों में रखे अंडों से बच्चे न निकल जाएँ और पक्षी उन्हें उड़ना न सिखा लें तब तक घोसलों को न छेड़ा जाए। यदि फिर भी घर छोड़ना अनिवार्य हुआ तो उस घर में जाने वाले नए परिवार से मिलकर यह अनुरोध करेंगे कि वे घोंसलों को यथावत रहने दें तथा उनका ध्यान रखें।

❑

5. फेरीवालों की आवाजें

❑ अभ्यास

1. (क) (ii) ककड़ियों को (ख) (iii) दिल्ली (ग) (iii) शाहजहाँ के काल में

2. (क) रस (ख) फेरीवालों (ग) परांठे

3. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (iii)

4. (क) केराने के लड्डू हैं आम।

(ख) खरबूजे के विषय में कहा गया है, सच्ची कहना फीके या मीठे।

(ग) ककड़ियाँ लैला की उँगलियाँ और मजनूँ की पसलियाँ जैसी हैं।

(घ) फेरीवाले अपने सौदे को एक बड़ी लच्छेदार आवाज में और अक्सर सुरीले स्वर में और कभी-कभी तो गाकर बेचते थे।

5. (क) किसी साहित्यकार ने सच लिखा है कि दिल्ली के बाजारों-कूचों में फेरीवालों की आवाजें सुनकर ऐसा लगता था कि इस्फहान के शाइर चौक में गजल पढ़ रहे हैं।

(ख) शाहजहाँ की इच्छा थी कि फेरीवाले उसकी नयी राजधानी शाहजहाँनाबाद में अपनी चीजों को साफ और ऊँची आवाज में बेचें ताकि घर की औरतें अपने घरों की ड्योढ़ी पर जरूरत की चीजें खरीद सकें और फेरीवाले तथा राह चलते लोग उन्हें न देख सकें।

6. (क) इस वाक्य में 'का' संबंध कारक है तथा इस वाक्य में अनुप्रास अलंकार है, जिसमें 'क' वर्ण की पुनरावृत्ति की गई है।

(ख) **संज्ञा**—दिल्ली

सर्वनाम—ये

7. (क) भाषा का मीठापन संवाद में सुधार करता है और लोगों के बीच समर्थन और समझदारी को बढ़ावा देता है। यह संबंधों को मजबूती प्रदान करता है और साथियों के साथ संबंध बनाए रखने में मदद करता है, जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का हित होता है।

(ख) व्यापार में अपनी वस्तुओं की प्रशंसा करना उन्हें बाजार में पहचान दिलाने और ग्राहकों को प्राप्त करने में मदद कर सकता है। यह विशेषज्ञता और ब्रांड स्थापित करने में मदद कर सकता है, जो व्यावसायिक सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए व्यापार के लिए अपनी वस्तुओं की प्रशंसा जरूरी होती है।

8. (क) छात्र स्वयं करें।

(ख) छात्र स्वयं करें।

❑

6. खानपान की बदलती तसवीर

❑ अभ्यास

1. (क) (ii) एथनिक (ख) (i) साहबी ठिकानों तक (ग) (ii) पेड़े
(घ) (iii) आगरा (ङ) (ii) गुजरात

2. (क) शहरी (ख) ढाबा (ग) फास्ट फूड
(घ) मिश्रित (ङ) स्थानीय

3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) इडली-डोसा, बडा-साँभर, रसम अब केवल दक्षिण भारत तक सीमित नहीं है।

(ख) बंगाली मिठाइयाँ चर्चा का विषय है।

(ग) हाँ, मध्यमवर्गीय जीवन में भोजन विविधता अपनी जगह बना चुकी है।

(घ) उत्तर भारत की 'ढाबा' संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है। अब आप कहीं भी हों, उत्तर भारतीय रोटी-दाल-साग आपको मिल ही जाएँगे। उत्तर भारत में जो चीजें गली-मुहल्लों की दुकानों में आम हुआ करती थीं, उन्हें अब खास दुकानों में तलाशा जाता है।

5. (क) खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का मतलब है—स्थानीय अन्य प्रांतों तथा विदेशी व्यंजनों के खानपान का आनंद उठाना यानी स्थानीय व्यंजनों के खाने-पकाने में रुचि रखना, उसकी गुणवत्ता तथा स्वाद को बनाए रखना। इसके अलावा अपने पसंद के आधार पर एक-दूसरे प्रांत को खाने की चीजों को अपने भोज्य पदार्थों में शामिल किया है। जैसे आज दक्षिण भारत के व्यंजन इडली-डोसा, साँभर इत्यादि उत्तर भारत में चाव से खाए जाते हैं और उत्तर भारत के ढाबे के व्यंजन सभी जगह पाए जाते हैं। यहाँ तक पश्चिमी सभ्यता का व्यंजन बर्गर, नूडल्स का चलन भी बहुत बढ़ा है। हमारे घर में उत्तर भारतीय

और दक्षिण भारतीय दोनों प्रकार के व्यंजन तैयार होते हैं। मसलन में उत्तर भारतीय हूँ, हमारा भोजन रोटी-चावल-दाल है लेकिन इन व्यंजनों से ज्यादा इडली साँभर, चावल, चने-राजमा, पूरी, आलू, बर्गर अधिक पसंद किए जाते हैं। यहाँ तक कि हम यह बाजार से ना लाकर घर पर ही बनाते हैं। इतना ही नहीं विदेशी व्यंजन भी बड़ी रुचि से खाते हैं। लेखक के अनुसार यही खानपान की मिश्रित संस्कृति है।

(ख) खानपान में बदलाव से निम्न फायदे हैं—

1. भिन्न प्रदेशों की संस्कृतियों को जानने और समझने का मौका मिलना।
2. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलना।
3. अलग-अलग प्रकार के भोजन खाने के कारण खाने में रुचि बने रहना।
4. देश-विदेश के व्यंजन मालूम होना।
5. गृहिणियों व कामकाजी महिलाओं को जल्दी तैयार होने वाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध होना।

खानपान में बदलाव आने से होने वाले फायदों के बावजूद लेखक इस बदलाव को लेकर चिंतित है क्योंकि उसका मानना है कि आज खानपान की मिश्रित संस्कृति को अपनाने से नुकसान भी हो रहे हैं जो निम्न रूप से हैं—

1. स्थानीय व्यंजनों का चलन कम होता जा रहा है जिससे नई पीढ़ी स्थानीय व्यंजनों के बारे में जानती ही नहीं है।
2. खाद्य पदार्थों में शुद्धता की कमी होती जा रही है।
3. कुछ व्यंजनों का स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित न होना।

(ग) खानपान के मामले में स्थानीयता का अर्थ है कि वे व्यंजन जो स्थानीय आधार पर बनते थे, जैसे—मुम्बई की पाव-भाजी, दिल्ली के छोले-कुलचे, मथुरा के पेड़े व आगरा के पेठे-नमकीन, तो कहीं किसी प्रदेश की जलेबियाँ, पूड़ी और कचौड़ी आदि स्थानीय व्यंजनों का अत्यधिक चलन था और अपना अलग महत्त्व भी था। खानपान की मिश्रित संस्कृति के आने के कारण अब लोगों को खाने-पीने के व्यंजनों में इतने विकल्प मिल गए हैं कि अब स्थानीय व्यंजनों का प्रचलन धीरे-धीरे कम होता जा रहा है।

(घ) छात्र स्वयं करें।

(ङ)

घर में बनने वाली	**बाज़ार से आने वाली**	**माता-पिता जी के बचपन में घर में बनने वाली**
भात	समोसा	समोसे
दाल	कचौड़ी	कचौड़ी
सब्जियाँ	जलेबियाँ	जलेबियाँ
पूरी, रोटी, पराठे	नूडल्स	

(च)

भोजन	कैसे पकाया	स्वाद
दाल	उबालना	नमकीन
भात	उबालना	मीठा
रोटी	सेंकना	मीठा
पापड़	सेंकना	नमकीन
आलू	उबालना	मीठा
बैंगन	भूनना	कसैला

6. (क)

शब्द	वाक्य
सीना-पिरोना	आजकल सीना-पिरोना सभी को आना चाहिए।
भला-बुरा	तुमने कमल को कल बहुत भला-बुरा कह दिया।
चलना-फिरना	वृद्ध होने के कारण नानाजी का चलना-फिरना कम हो गया है।
लंबा-चौड़ा	इतना लंबा-चौड़ा बिजली का बिल देखकर मैं हैरान रह गई।
कहा-सुनी	घर में रोज की कहा-सुनी अच्छी बात नहीं है।
घास-फूस	गाँव के घरों की छत घास-फूस की होती है।

(ख) **कारक**—'से' करण कारक और 'को' कर्म कारक

(ग) **सर्वनाम**—वे

(घ) **पुनरुद्धार शब्द का अर्थ**—किसी नष्ट हुई टूटी-फूटी वस्तु को फिर से ठीक करके नए जैसा बनाना।

7. (क) खानपान की मिश्रित संस्कृति देश की मिली-जुली संस्कृति से जुड़ी होती है, जिसमें भौगोलिक परिस्थितियाँ, स्थानीय उपभोक्ता परंपराएँ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल होते हैं। यह एक समृद्धि और सांस्कृतिक आद्यतन का परिणाम होता है, जिसमें भोजन की विविधता और विभिन्न प्रभाव शामिल होते हैं।

(ख) राष्ट्रीय एकता के लिए विस्तृत दृष्टिकोण आवश्यक है क्योंकि यह समृद्धि और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने में मदद करता है। विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों में एक राष्ट्र को समृद्धि और विकास की दिशा में अग्रणी बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है।

8. (क) (i) छात्र स्वयं करें।

(ii) छात्र स्वयं करें।

(ख) (i) खानपान के मामले में गुणवत्ता यानी शुद्धता होना आवश्यक है, क्योंकि अशुद्धता अनेक बीमारियों को जन्म देती है। आजकल खाने-पीने वाले पदार्थों में मिलावट बढ़ती जा रही है। उदाहरण के तौर पर हल्दी व काली मिर्च ऐसे पदार्थ हैं जिसमें मिलावट आमतौर पर देखी जा सकती है। हल्दी में मिट्टी व काली मिर्च में पपीते के बीजों का मिश्रण होता है। इसके

अलावा दूध में भी पानी मिलाना तो आम बात हो गई है, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। आज के मुनाफाखोरी युग में लोग किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। आज मुनाफाखोरी के युग में लोग कोई भी समझौता करने को तैयार हैं। लोगों को स्वास्थ्य की फिक्र जरा भी नहीं है। वास्तव में ऐसा करने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है। आँखों की रोशनी कम हो जाती है। लीवर की खराबी, साँस सम्बन्धी रोग, पीलिया आदि रोगों को जन्म देते हैं। सब्जियों में डाले जाने वाले केमिकल्स से हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। मिलावटखोरों के प्रति सजग होकर खाद्य पदार्थों में किसी तरह की मिलावट का विरोध करना चाहिए।

(ii) छात्र स्वयं करें।

❑

7. शाम-एक किसान

❑ अभ्यास

1. (क) (i) आकाश का (ख) (iii) किसान
(ग) (i) घुटनों पर रखी चादर सी (घ) (ii) अंधेरा (ङ) (i) शांत

2. (क) गल्ले (ख) अँगीठी (ग) चिलम (घ) आवाज (ङ) उठा

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) कविता के माध्यम से कवि ने पर्वतीय प्रदेश के सायंकालीन प्राकृतिक सौंदर्य को दर्शाने का प्रयास किया है। कवि ने जाड़े की शाम को किसान के रूप में चित्रण किया है।

(ख) इस कविता के रचयिता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हैं।

(ग) पहाड़ एक किसान के रूप में लगता है। उसने सिर पर साफा बाँध रखा है और चिलम पी रहा है।

(घ) दूर फैला अंधकार झुंड में बैठी भेड़ों जैसा दिखायी दे रहा है।

(ङ) डूबता सूरज चिलम के जैसा लग रहा है।

5. (क) दूसरी एकरूपता—चिलम सूरज-सी
चौथी एकरूपता—अँगीठी पलाश के फूलों-सी
पाँचवी एकरूपता—अंधकार भेड़ों के गल्ले-सा।

(ख) शाम में घर की छत या खिड़की से देखने पर पता चला है कि—

(i) सूर्य के पश्चिम में पहुँचने के साथ-साथ ही संध्या होने की रंगत होने लगती है।

(ii) शाम से सूरज के डूबने तक लगभग एक से डेढ़ घंटे का समय लगा।

(iii) इस बीच आसमान में लालिमा छा जाती है, नारंगी तथा बैंगनी रंग के बादलों से आकाश व दिशाएँ ढक गईं।

6. (क) उपर्युक्त पंक्तियों में सा/सी का प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से दो रूपों में हुआ है—चादर-सी, गल्ले-सा, परदा-सा।

इन शब्दों में सा/सी का प्रयोग उपमा के रूप में किया गया है; जैसे—नदी चादर-सी अर्थात् नदी चादर के समान

भेड़ों के गल्ले-सा अर्थात् भेड़ों के झुंड समान

पानी परदा-सा अर्थात् पानी परदे के समान

दूसरी और सा/सी का प्रयोग विशेषण के तौर पर किया गया है; जैसे—मरियल-सा कुत्ता अर्थात् कमजोर कुत्ता

छोटा-सा-दिल अर्थात् छोटा दिल

नन्हीं-सी चिड़िया अर्थात् छोटी चिड़िया।

(ख) **औंधी**—

(i) रानी औंधी होकर लेटी है।

(ii) कटोरी औंधी रखी हुई है।

दहक—

(i) अँगीठी में आग दहक रही थी।

(ii) सोमेश गुस्से से दहक रहा था।

सिमटा—

(i) बच्चा माँ की गोद में सिमटा बैठा था।

(ii) सूर्य के छिपते ही कमल के फूल सिमटकर बंद होने लगे।

(ग) कबूतर—कहाँ जा रहे हो?

कौआ—सुनो! रात न होने दो।

मैना—तुम मनमोहक हो।

तोता—तुम्हारा समय निराला है।

चील—थोड़ी देर तो रुको।

हंस—तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं।

(घ) **कारक**—'का' संबंध कारक।

(ङ) कविता में मानवीकरण अलंकार प्रमुखता से प्रयोग हुआ है।

7. (क) प्रकृति से साहित्यकार या कवि की प्रेरणा उनके आसपास के प्राकृतिक तत्त्वों, वातावरण और समस्त जीवन के सांस्कृतिक अनुभवों से हो सकती है। इसमें उनकी संवेदनशीलता, दृष्टिकोण और आत्म-अभ्यास का भाव शामिल हो सकता है, जिससे वे अपनी रचनाओं में प्राकृतिक सौंदर्य और जीवन के अनूठे पहलुओं को अभिव्यक्त करते हैं।

(ख) प्रकृति अपनी सुंदरता, सांस्कृतिक विविधता और संवेदनशीलता के माध्यम से सभी जीवों से प्रेम करना सिखाती है। इससे हमें जीवन के सारे रूपों का सम्मान और प्रेम करने की शिक्षा मिलती है, जो सहजता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है।

8. (क) पक्षी—अपने-अपने घोसलों में लौट आते हैं।
खिलाड़ी—अपने अभ्यास या खेल को समाप्त कर आराम करते हैं।
फलवाले—अपना सामान जल्दी बेचकर घर जाने का प्रयास करते हैं।
माँ—रात का खाना तैयार करती है।
पेड़-पौधे—वे भी विश्राम करना चाहते हैं।
पिता जी—दफ्तर से घर की ओर लौटते हैं।
किसान—दिनभर परिश्रम कर अपने बैलों के साथ घर की ओर लौटता है।
बच्चे—खेल या अभ्यास करते हैं।

(ख) (i) है अंधकार अब लुपत हो गया,
हर ओर प्रकाश अब होना है।
उठकर बढ़ना है आगे,
न देर तलक अब सोना है।
तेज चमकना है हमको,
सूरज की किरन है बता रही।
पंछियों की मधुर ध्वनी,
हम सबको है जगा रही।

(ii) छात्र स्वयं करें।

❑

8. आश्रम का अनुमानित व्यय

❑ अभ्यास

1. (क) (ii) 6 हजार (ख) (i) अहमदाबाद (ग) (ii) दस रुपया
(घ) (i) 5 एकड़ (ङ) (iii) ₹ 150 में

2. (क) पाँच (ख) अनुमान (ग) दस (घ) तीन (ङ) पहले

3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) आरंभ में संस्था (आश्रम) में चालीस लोग होंगे।
(ख) तीन हजार पुस्तकों के लिए पुस्तकालय एवं अलमारियाँ चाहिए।
(ग) वस्तुओं का अनुमानित खर्च पाँच रुपये माना गया।
(घ) रसोईघर के लिए आवश्यक सामान पर एक सौ पचास रुपये खर्च अनुमानित किया गया।
(ङ) एक वर्ष के लिए खाने का खर्च छह हजार रुपये अनुमानित किया गया।

5. (क) गाँधीजी छेनी, हथौड़े, बसूले इत्यादि इसलिए खरीदना चाहते होंगे ताकि—
(i) हर व्यक्ति को उसके अनुरूप काम मिल सके।
(ii) आश्रम के निर्माण पर होने वाली लागत को कम किया जा सके।

(iii) हर व्यक्ति को उसके परिश्रम की रोटी मिले।

(iv) कोई व्यक्ति आलसी न बने।

(v) प्रत्येक व्यक्ति दूसरों को काम करता देख स्वयं काम करने के लिए प्रेरित हो सके।

(ख) गाँधीजी के आश्रम खोलने का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी आंदोलन, सत्याग्रह, स्वावलंबन और सामाजिक सुधार को प्रोत्साहित करना था। इसके माध्यम से वह विशेषकर भूखे, निर्धन और असमानता से प्रभावित लोगों की सहायता करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे थे।

(ग) गाँधीजी के आश्रम को एक पिता की तरह सभी खर्च उठाने का कारण यह था कि उनका मौद्रिक दृष्टिकोण सामाजिक सेवा और सामाजिक सुधार की ओर था। उन्होंने यहाँ रहने वाले लोगों से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे वह अपने अनुयायियों को स्वावलंबी बनाने का संदेश देना चाहते थे।

6. (क) (i)

शब्द	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**	**परिवर्तन**
प्रमाणित	प्रमाण	इत	ण का णित
व्यथित	व्यथा	इत	था का थित
द्रवित	द्रव	इत	व का वित
मुखरित	मुखर	इत	र का रित
झंकृत	झंकार	इत	र का रित
शिक्षित	शिक्षा	इत	क्षा का क्षित
मोहित	मोह	इत	ह का हित
चर्चित	चर्चा	इत	चा का चित

(ii)

शब्द	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**	**परिवर्तन**
मौखिक	मुख	इक	उ का औ
संवैधानिक	संविधान	इक	इ का ऐ
प्राथमिक	प्रथम	इक	अ का आ
नैतिक	नीति	इक	ई का ऐ
पौराणिक	पुराण	इक	उ का औ
दैनिक	दिन	इक	इ का ऐ

(ख) (i) राहखर्च (ii) क्रीडाक्षेत्र

(iii) तुलसीकृत (iv) घुड़सवार

(v) गंगाजल (vi) वनवास

इन शब्दों में दूसरा शब्द प्रमुख है क्योंकि दूसरा शब्द पहले शब्द की सार्थकता को स्पष्ट कर रहा है। जैसे—

(i) राहखर्च राह के लिए खर्च

(ii) क्रीड़ाक्षेत्र क्रीड़ा के लिए क्षेत्र

(iii) तुलसीकृत — तुलसी द्वारा कृत
(iv) घुड़सवार — घोड़े पर सवार
(v) गंगाजल — गंगा का जल
(vi) वनवास — वन में वास

(ग) **कारक**—'के, की' संबंध कारक

(घ) **सर्वनाम**—इसको

(ङ) **काल**—भविष्यतकाल।

7. (क) हमारी सोच मानव हित और नि:स्वार्थ पालन पर आधारित होनी चाहिए क्योंकि यह समाज को समृद्धि और सामाजिक न्याय की दिशा में ले जाती है।

(ख) हाँ, प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करके खाने का अधिकार और दायित्व होना चाहिए। यह समाज में न्याय और सामाजिकता को बढ़ावा देता है और गरीबी कम करने में सहायक होता है।

8. (क) (i) गाँधी जी कोई भी कार्य बिना हिसाब-किताब के नहीं करते थे। वे प्रत्येक विषय के प्रति नकारात्मक व सकारात्मक सोच बराबर रखते थे। निम्न उदाहरणों द्वारा इस वक्तव्य को स्पष्टता दे सकते हैं—

(अ) 'दांडी यात्रा' के लिए गाँधी जी जब 'रास' नामक स्थान पर पहुँचे तो वहाँ निषेधाज्ञा लागू थी अर्थात् कोई भी नेता किसी प्रकार के विचार जुलूस-जलसे के रूप में प्रकट नहीं कर सकता था। गाँधी जी तो लोगों को संबोधित किए बिना नहीं रह सकते थे तो पहले ही यह योजना बना ली गई कि यदि उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तो अब्बास तैयबजी दांडी यात्रा का नेतृत्व करेंगे।

(ब) असहयोग आंदोलन के समय भी वे यह हिसाब लगाने में पूर्णतया सक्षम थे कि किस स्थान पर किस तरह से ब्रिटिश शासन पर प्रहार करना है। यही कारण था कि लोग उनके हर विचार की कद्र करते थे और उनका कहा पूरी तरह से मानते थे।

(स) वे बिल्कुल भी फिजूल खर्च नहीं करते थे एक-एक पैसा सोच-समझकर खर्च करते थे यहाँ तक कि कई बार तो पच्चीस-पच्चीस किलोमीटर एक दिन में पैदल चलते थे। उनका मानना था कि धन को जरूरी कामों के लिए ही खर्च करना चाहिए। शानो-शौकत या वैभवपूर्ण जीवन जीने के लिए नहीं।

(द) किसी भी आश्रम या सभा का हिसाब-किताब वे बहुत कुशलता से लगाते थे। साबरमती आश्रम में भी उन्होंने ऐसा बजट बनाया कि आने वाले मेहमानों के खर्च भी उसमें शामिल किए गए।

(ii) छात्र इस पाठ से उदाहरण लेकर बाल आश्रम के लिए आवश्यक चीजों और उनके अनुमानित-खर्च का बजट तैयार करें।

(ख) (i) खाट बुनना, टोकरी बनाना, घर बनाना, घर की पुताई, गिटार बजाना, खाना पकाना, मोटरसाइकिल चलाना, कम्प्यूटर पर काम करना, कार चलाना ऐसे काम हैं, जिन्हें मैं चाहकर भी नहीं सीख पाया। इसका कारण यह था कि—

(अ) मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान देता था।

(ब) मोटरसाइकिल या कार चलाने के लिए मेरी उम्र 18 साल नहीं है।

(स) कुछ कामों का मैं नियमित अभ्यास न कर सका। वे काम, जिन्हें मैं सीखकर ही दम लूँगा; जैसे—पुताई करना (पेंट करना), मोटरसाइकिल या कार चलाना, कम्प्यूटर पर काम करना, गिटार बजाना आदि।

(ii) आश्रम के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में निम्नलिखित अनुमान लगाए जा सकते हैं—

(अ) लोग परिश्रमी तथा उद्यमशील बनें।

(ब) लोग अपनी मेहनत की कमाई खाएँ।

(स) लोग कुछ सीखकर स्वतंत्र जीवन बिता सकें।

(द) अनुशासन तथा परिश्रम का महत्त्व समझ सकें।

(य) खर्च में कटौती कर बचत कर सकें।

(र) समूह में रहकर कार्य करें तथा उनमें ऊँच-नीच की भावना समाप्त हो तथा सहयोग, सहभागिता तथा सहनशीलता जैसे मानवीय गुण विकसित हो सकें।

❑

9. एक तिनका

❑ अभ्यास

1. (क) (i) कवि (ख) (iii) तिनका (ग) (iii) समझ ने (घ) (i) ऐंठ (ङ) (iii) लोग

2. (क) एक दिन जब मुंडेरे पर खड़ा था।

(ख) आँख भी लाल होकर दुखने लगी।

(ग) बेचारी ऐंठ दबे पाँव भागी।

(घ) जब तिनका किसी ढब से निकल गया।

3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (ii)

4. (क) कवि एक दिन मुंडेरे पर खड़ा था।

(ख) तिनके वाली घटना से कवि समझ गया कि मनुष्य को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। एक तिनके ने हमें बेचैन कर दिया और हमारी औकात बता दी, उन्हें

यह बात भी समझ में आ गई कि उन्हें परेशान करने के लिए एक तिनका ही काफी है। अत: उसे किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए।

(ग) कवि की आँख में तिनका गिर जाने के कारण वह बेचैन हो गया और उसकी आँख लाल हो गई व दुखने लगी।

(घ) एक तिनके ने कवि को बेचैन कर दिया था। वह तड़प उठा। थोड़ी देर में उसकी आँखें लाल हो गईं और दुखने लगीं। कवि की सारी ऐंठ और अहंकार गायब हो गया।

(ङ) कवि के लिए एक तिनका काफी है।

5. (क) इस कविता में उस घटना का वर्णन किया गया है जब कवि की आँख में एक तिनका गिर गया। उस तिनके से काफी बेचैन हो उठा। उसका सारा घमंड चूर हो जाता है। किसी तरह लोग कपड़े की नोक से उसकी आँखों में पड़ा तिनका निकालते हैं तो कवि सोच में पड़ जाता है कि आखिर उसे किस बात का घमंड था, जो एक तिनके ने उसके घमंड को जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया। उसकी बुद्धि ने भी उसे ताने दिए कि तू ऐसे ही घमंड करता था। तेरे घमंड को चूर करने के लिए तिनका ही बहुत है। इससे यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति को स्वयं पर घमंड नहीं करना चाहिए। एक तुच्छ व्यक्ति या वस्तु भी हमारी परेशानी का कारण बन सकती है। हर वस्तु का अपना महत्त्व होता है।

(ख) आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी परेशान हो गया। उसे पीड़ा होने लगी और उसकी सारी ऐंठ (घमंड) गायब हो गई।

(ग) घमंडी की आँख से तिनका निकालने के लिए आसपास के लोगों ने कपड़े को लपेटकर मूँठ बनाया और वे उसकी मदद से आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगे।

(घ) **दोनों में समानता—**

(i) दोनों ही दोहों में तिनके को शक्तिहीन न समझने की चेतावनी दी गई है।

(ii) एक नन्हा-सा तिनका आदमी को बेबस कर सकता है।

दोनों में अंतर—

(i) पहले काव्यांश में तिनके द्वारा कष्ट देने के ढंग का संकेत नहीं है, जबकि दूसरे में स्पष्ट संकेत है।

(ii) पहले काव्यांश में घमंड न करने की सलाह दी गई है जबकि दूसरे में तिनके की भी निंदा न करने की सलाह दी गई है।

6. (क) मेंढक पानी में **छप से** कूद गया।

(ख) नल बंद होने के बाद पानी की एक बूँद **टप से** टपक गई।

(ग) शोर होते ही चिड़िया **फुर्र से** उड़ी।

(घ) ठंडी हवा **सन् से** गुजरी, मैं ठंड में **थर से** काँप गया।

7. (क) **कारक**—'से' करण कारक।

(ख) 'तब समझ ने मुझे ताने दिए' वाक्य में अनुप्रास अलंकार है, क्योंकि इसमें 'त' ध्वनि के आधार पर एक ही वर्ण की पुनरावृत्ति की गयी है।

(ग) **विशेषता**—लाल होना।

(घ) तिनका शब्द के अलग-अलग अर्थ—

तिनका—अज्ञान रूपी तिनका

तिनका-तिनका होना—छोटे-छोटे टुकड़े होकर बिखर जाना

तिनका—उनका

तिनके—उनके (ईश्वर के)

8. (क) घमंड या अहंकार मनुष्य के विकास में काफी बाधक है। व्यक्ति को अपने आप पर या धन-दौलत पर घमंड नहीं करना चाहिए। एक छोटी-सी वस्तु या छोटा व्यक्ति भी हमारे घमंड को चुनौती देने की क्षमता रखता है और मुसीबत में डाल सकता है।

(ख) किसी प्राणी को हेय (कमतर) नहीं समझना चाहिए, क्योंकि हर एक का जीवन महत्त्वपूर्ण है और सभी को सहानुभूति और दया से देखा जाना चाहिए। अधिकार, न्याय और सजगता के साथ हम सभी को एक-दूसरे के साथ शांति से रहना चाहिए।

9. (क) वह घमंडों में भरा ऐंठा हुआ।

एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ,
एक तिनका आँख में उसकी पड़ा
वह झिझक उठा, हुआ बेचैन-सा
लाल होकर आँख भी दुखने लगी।
मूँठ देने लोग कपड़े की लगे,
ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भागी।।
जब किसी ढब से निकल तिनका गया,
तब उसकी 'समझ' ने यों उसे ताने दिए।
ऐंठता तू किसलिए इतना रहा,
एक तिनका है बहुत तेरे लिए।

(ख) ऐंठ और समझ

समझ-ऐंठा! इतना ऐंठती क्यों हो?

ऐंठ-समझ! यह तेरी समझ से बाहर की बात है।

समझ—ऐसी कौन-सी बात है जो मेरी समझ में नहीं आती।

ऐंठ—समझ तेरी समझ में यह नहीं आता कि यदि मनुष्य सुंदर हो, धनवान हो, समाज में ऊँचा स्थान रखता हो तो उसे अपने ऊपर घमंड आ ही जाता है।

समझ—नहीं! ऐंठ, कभी घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि यह सब तो क्षणभंगुर है कभी भी नष्ट हो सकता है। लेकिन मनुष्य की विनम्रता, उसकी परोपकार की भावना व हँसमुख स्वभाव कभी स्पष्ट नहीं होता। (इतने में ऐंठ की आँख में एक तिनका उड़कर पड़ गया।) ऐंठ। इतना तिलमिला क्यों रही हो?

ऐंठ—न जाने कहाँ से आँख में तिनका आकर पड़ गया है। मैं तो बहुत बेचैन हो रही हूँ।

समझ—अब तुम्हारा घमंड कहाँ गया? एक छोटे से तिनके से तिलमिला उठीं।

ऐंठ—मुझे क्षमा करो 'समझ'। अब मैं कभी अपने पर घमंड नहीं कर करूँगी।

❑

10. हिमालय की बेटियाँ

❑ अभ्यास

1. (क) (iii) नदियाँ (ख) (ii) मैदानों में (ग) (iii) हिमालय की
(घ) (ii) समुद्र (ङ) (ii) काका कालेलकर
(च) (iii) सतलज

2. (क) धुनता (ख) विराट (ग) किनारे (घ) छाप (ङ) विरह

3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii)

4. (क) नदियाँ अपने आप में खोई हुई लगती थीं।

(ख) गंगा, यमुना और सतलज नदियाँ मैदानों में उतरकर विशाल हो जाती हैं।

(ग) लेखक ने नदी को बेटी कहा है और इन बेटियों की बाललीला देखकर लेखक को सर्वाधिक विस्मय होता है।

(घ) कालिदास के विरही यक्ष ने अपने मेघदूत से कहा था—वेत्रवती (बेतवा) नदी को प्रेम का प्रतिदान देते जाना, तुम्हारी वह प्रेयसी तुम्हें पाकर अवश्य ही प्रसन्न होगी।

(ङ) लेखक सतलज के किनारे जाकर बैठ गये। पैर पानी में लटका दिए। थोड़ी ही देर में उस प्रगतिशील जल ने असर डाला। तन और मन ताजा हो गया और गुनगुनाने लगे।

5. (क) नदियों को माँ मानने की परंपरा भारतीय संस्कृति में अत्यंत पुरानी है। नदियों को माँ का स्वरूप माना गया है, नदियाँ अपने जल से माँ के समान हमारा पालन-पोषण करती हैं, हमारे खेतों को सींचती हैं लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें बेटी, प्रेयसी व बहन के रूपों में भी देखते हैं।

(ख) सिंधु और ब्रह्मपुत्र हिमालय से निकलने वाली प्रमुख और बड़ी नदियाँ हैं। इन दो नदियों के बीच से अन्य छोटी-बड़ी नदियाँ बहती हैं। ये नदियाँ दयालु हिमालय के पिघले दिल की एक-एक बूँद से इकट्ठा होकर ये नदियाँ बनी हैं। ये नदियाँ सुंदर एवं लुभावनी लगती हैं।

(ग) जल ही जीवन है। ये नदियाँ हमें जल प्रदान कर जीवनदान देती हैं। ये नदियाँ लोगों के लिए कल्याणी एवं माता के समान पवित्र हैं। इन नदियों के किनारे ही लोगों ने अपनी पहली बस्ती बसाई और खेतीबाड़ी करना शुरू किया। इसके अलावा ये नदियाँ गाँवों और शहरों की गंदगी भी अपने साथ बहाकर ले जाती रही हैं। इनका जल भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है। मानव के आधुनिकीकरण में जैसे—बिजली बनाना, सिंचाई के नवीन साधनों आदि में इन्होंने पूरा सहयोग दिया है। मनुष्य के लिए ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि के लिए बहुत जरूरी है। इस प्रकार नदियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हैं। यही कारण है कि काका कालेलकर ने उन्हें लोकमाता कहा है।

(घ) हिमालय की यात्रा में लेखक ने हिमालय की अनुपम छटा की, नदियों की अठखेलियों की, बर्फ से ढँकी पहाड़ियों की, पेड़-पौधों से भरी घाटियों की, चीर, देवदार, सरो, चिनार, कैल से भरे जंगलों की प्रशंसा की है।

(ङ) 1947 के बाद से आज तक नदियाँ उसी प्रकार हिमालय से बह रही हैं, लेकिन अब हिमालय से निकलने वाली नदियाँ प्रदूषण का शिकार हो चुकी हैं। अब जनसंख्या वृद्धि औद्योगिक क्रांति, मानवीय तथा प्रशासकीय उपेक्षा के कारण नदी के जल की गुणवत्ता में भी भारी कमी आई है। निरंतर प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। जगह-जगह बाँध बनाने के कारण जल-प्रवाह में न्यूनता हो गई जो कि मानव अहितकारी है। गंगा जल की पवित्रता समाप्त हो चुकी है।

6. (क)

विशेषण	**विशेष्य**
संभ्रांत	महिला
चंचल	नदियाँ
समतल	आँगन
घना	जंगल
मूसलाधार	वर्षा

(ख) पाठ में निम्नलिखित द्वंद्व समासों का प्रयोग हुआ है—
छोटी-बड़ी
माँ-बाप
दुबली-पतली
भाव-भंगी

(ग) राही-हीरा (द्रव्यवाचक संज्ञा)
नामी-मीना (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
धारा-राधा (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
राम-मरा (भाववाचक संज्ञा)
जाता-ताजा (भाववाचक संज्ञा)

(घ) सतलुज — शतद्रुम
रोपड़ — रूपपुर
झेलम — वितस्ता
चिनाब — विपाशा
अजमेर — अजयमेरु
बनारस — वाराणसी

(ङ) इस वाक्य में मानवीकरण अलंकार है।

(च) **कारक**—'ने' कर्त्ता कारक, 'से' करण कारक तथा 'के' संबंध कारक।

(छ) **समुच्चयबोधक शब्द**—'और'।

(ज) (i) सतलज—संज्ञा

(ii) हिमालय—संज्ञा, बुड्ढा—विशेषण।

7. (क) नदियों का महत्त्व विशेष रूप से विविधता, जलसंग्रहण, परिवहन और कृषि के क्षेत्र में होता है। ये प्राकृतिक स्रोत हमें पानी प्रदान करती हैं और जलवायु में सुधार करती हैं। गंगा नदी को पवित्र माना जाता है क्योंकि इसे हिन्दू धर्म में माता के रूप में पूजा जाता है। धार्मिक अनुष्ठानों में गंगा का जल शुद्धि, पावनता और मोक्ष की प्राप्ति का साधन माना जाता है।

(ख) प्रकृति से प्रेम और उसका रखरखाव हमारा परमदायित्व है क्योंकि प्रकृति हमें जीवन को संतुलित बनाए रखने में मदद करती है। हमारा जीवन प्रकृति से संबंधित है। प्रकृति के साथ संबंध एकता और सहजता का अहसास कराता है।

8. (क) लेखक ने नदियों को हिमालय की बेटियाँ कहा है, क्योंकि वह नदियों का उद्‌गम स्थल है। पर हम उन्हें माँ समान ही कहना चाहेंगे, क्योंकि वे हमें तथा धरती को जल प्रदान करती हैं। हमारी प्यास बुझाने के साथ-साथ खेतों की भी प्यास बुझाती हैं। एक माँ एवं सच्चे मित्र के रूप में नदियाँ हमारी सदैव हितैषी रही हैं और उन्होंने भलाई की है।

नदियों की सुरक्षा के लिए सरकार प्रयास तो कर रही है, पर वे अपर्याप्त हैं। उनमें दिखावा अधिक है तथा वास्तविकता कम है। अभी तक उनमें गिरने वाले कारखाने के कचरे को रोका नहीं जा सका है। फिर भी नदियों की सुरक्षा के लिए हमारे देश में कई योजनाएँ बनाई जाती रही हैं।

नदियों के जल को प्रदूषण से बचाना, बहाव को सही दिशा देना, अधिक नहरों के निर्माण पर रोक लगाना, जल का कटाव रोकना, नदियों की सफाई की उचित व्यवस्था करना आदि हैं, परंतु आज इस बात की आवश्यकता है कि शीघ्रता से इन योजनाओं को लागू कर दिया जाए। नदियों की सफाई की उचित व्यवस्था की जाए। उनमें कचरे फेंकने पर रोक लगाई जाए, कल-कारखानों से निकलने वाले दूषित जल, रसायन तथा शव प्रवाहित करने पर रोक लगाई जाए। अत: नदियों की पवित्रता बनाए रखने के लिए जन-चेतना जगानी होगी। सरकार को भी कड़े उपाय करने होंगे।

(ख) नदियाँ हमारे जीवन का आधार हैं। बर्फीले पहाड़ों से अस्तित्व पाकर धरती के धरातल पर बहती हुई नदियाँ अपना सुधा रस रूपी जल असंख्य प्राणियों को प्रदान करती हैं। प्राणी मात्र की प्यास बुझाने के अतिरिक्त नदियाँ धरती को उपजाऊ बनाती हैं। इन पर बाँध बनाकर बिजली उत्पन्न की जाती है। हमारे अधिकतर तीर्थस्थल भी नदियों के किनारे बसे हैं, इसी कारण नदियाँ पूजनीय भी हैं। नदियों से हमें धरती हेतु उपजाऊ पदार्थ प्राप्त होते हैं। ये वनों को सींचती हैं। वर्षा लाने में सहायक होती हैं। अनगिनत जीव इनसे जीवन पाते हैं। नदियों के किनारे गाँवों का बसेरा पाया जाता है। गाँव के लोग अपनी छोटी-बड़ी सभी आवश्यकताएँ, जैसे—सिंचाई करने, पानी पीने, कपड़े धोने, नहाने, जानवरों हेतु नदियों का जल ही प्रयोग करते हैं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि नदियाँ हमारी संस्कृति की पहचान हैं। इन्हें दूषित नहीं करना चाहिए क्योंकि हमारा जीवन इन्हीं पर निर्भर है।

❑

11. फूले कदंब

❑ अभ्यास

1. (क) (ii) गेंद (ख) (i) कदंब छूने को

2. (क) तरस (ख) रीता

3. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (iii)

4. (क) कदंब का पेड़, फूल और फल गेंद के समान झूलते हैं।

(ख) बादल का क्रोध समाप्त नहीं हुआ।

(ग) लालच भरी आँखों से पपीहा देख रहा है।

5. (क) लेखक का मन कदंब के वृक्ष को छूने का करता है।

(ख) फूले कदंब कविता में लेखक ने कदंब के वृक्ष, सावन का मौसम, बादल तथा पपीहा की प्यास का मानवीयकरण किया है।

6. (क) इस वाक्य में रूपक अलंकार है।

(ख) **कारक**—'से' करण कारक।

सर्वनाम—तू।

7. (क) वर्षा जीवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखती है, जल स्रोतों को बचाए रखती है और जलवायु में सुधार करती है। इसके बिना वन्यजीव और मानव समुदाय के लिए संतुलित पर्यावरण सुरक्षित नहीं रह सकता।

(ख) प्रकृति से प्रेम होना चाहिए क्योंकि यह हमें जीवन की सुंदरता और उसकी अद्वितीयता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती है। प्रकृति हमें शांति, प्रेरणा और संतुलन का अहसास कराती है जिससे हमारा मन प्रसन्न रहता है।

8. (क) छात्र स्वयं करें।

(ख) छात्र स्वयं करें।

❑

12. ईदगाह

❑ अभ्यास

1. (क) (iii) 30 दिन (ख) (ii) अमीना (ग) (ii) 3 पैसे

(घ) (ii) चिमटा

2. (क) जूते (ख) हामिद (ग) दामन (घ) पालकी

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (ii)

4. (क) हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है।

(ख) हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं।

(ग) हामिद ने चिमटा खरीदा।

(घ) बालकों के दो दल हो गए।

(ङ) महमूद ने कहा—वकील साहब कुर्सी-मेज पर बैठेंगे तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में जमीन पर पड़ा रहेगा।

5. (क) हामिद को ख्याल आया कि दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा लेकर दादी को दे दे तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। इसलिए हामिद ने चिमटा खरीदा।

(ख) चिमटा देखकर अमीना ने कहा—"सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?"

(ग) हामिद ने अपनी अम्मा से कहा—तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

(घ) हामिद ने चिमटे की खासियत अपने साथियों को बतायी कि मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफान में बराबर डटा रहेगा। कंधे पर रखने से यह बंदूक तथा हाथ में लेने से यह फकीरों का चिमटा बन जाएगा। यह मंजीर का काम भी दे सकता है।

6. (क) **संज्ञा**—महमूद, पैसे

सर्वनाम—उसके

(ख) **विशेषण**—काला

(ग) **संज्ञा**—हामिद, पाँव, जूते, सिर और टोपी।
कारक—'के' संबंध कारक तथा 'में, पर' अधिकरण कारक।

7. (क) हमें अपने परिजनों की परेशानियों के विषय में सोचना चाहिए क्योंकि इससे संबंधों को मजबूत बनाए रखने में मदद मिलती है। उनके साथ एकजुट रहने का अवसर प्राप्त होता है।

(ख) अपने और परायों को खुशी देने से अपार खुशी मिलती है क्योंकि इससे संबंधों को मजबूती मिलती है और यह सामाजिक सहयोग का अहसास कराती है। इससे हम एक बेहतर जीवन जीने का अनुभव करते हैं और साथ ही दूसरों को समृद्धि और आनंद में भागीदार बनाते हैं।

8. (क) छात्र स्वयं करें।

(ख) छात्र स्वयं करें।

❑

13. कठपुतली

❑ अभ्यास

1. (क) (iii) गुनगुनाने की (ख) (i) पहली

(ग) (iii) धागे (घ) (i) अपने

2. (क) उबली (ख) छोड़ (ग) छंद (घ) जगी

3. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (iii)

4. (क) कठपुतली अपने पाँवों पर छोड़ने को कहती है।

(ख) कठपुतली को अपनी इच्छा पर संशय होता है। वह गुस्से से बोलती है ये धागे क्यों है मेरे पीछे-आगे? इन्हें तोड़ दो, मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो। हमें अपने मन के छंद हुए बहुत दिन हो गए हैं।

(ग) (i) ✓ (ii) ✓

(घ) (iv) ✓

5. (क) कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि उसे सदैव दूसरों के इशारों पर नाचना पड़ता है और वह लंबे अर्से से धागे में बँधी है। वह अपने पाँवों पर खड़ी होकर आत्मनिर्भर बनना चाहती है। धागे में बँधना उसे पराधीनता लगता है, इसीलिए उसे गुस्सा आता है।

(ख) कठपुतली स्वतंत्र होकर अपने पाँवों पर खड़ी होना चाहती है लेकिन खड़ी नहीं होती क्योंकि जब उस पर सभी कठपुतलियों की स्वतंत्रता की जिम्मेदारी आती है तो वह डर जाती है। उसे ऐसा लगता है कि कहीं उसका उठाया गया कदम सबको मुश्किल में न डाल दे।

(ग) जब पहली कठपुतली ने स्वतंत्र होने व आत्मनिर्भर होने की बात कही तो दूसरी कठपुतलियों को भी यह बात प्रेरक लगी। वे सब भी अपनी इच्छानुसार जीना

चाहती थी। उन्हें भी आत्मनिर्भर बनना था। इसी कारण से दूसरी कठपुतलियों को पहली कठपुतली की बात अच्छी लगी और उन्होंने सहमति दिखाई।

(घ) (i) सन् 1857—1. महारानी लक्ष्मीबाई, 2. मंगल पांडे

(ii) सन् 1942—1. महात्मा गाँधी, 2. जवाहर लाल नेहरू

6. (क) हाथ और करघा = हथकरघा
हाथ और कड़ी = हथकड़ी
सोन और परी = सोनपरी
मिट्टी और कोड = मटकोड, मटमैला
हाथ और गोला = हथगोला
सोन और जुही = सोनजुही

(ख) **कारक**—'से' करण कारक।

(ग) **सर्वनाम शब्द**—इन्हें, मुझे, मेरे।

(घ) इस वाक्य में अनुप्रास अलंकार है, क्योंकि इसमें 'ली' ध्वनि के आधार पर एक ही वर्ण की पुनरावृत्ति की गई है।

7. (क) स्वतंत्रता की अभिलाषा हर व्यक्ति के मन में होती है, क्योंकि यह उन्हें अपने जीवन में स्वतंत्रता, स्वाधीनता का अहसास कराती है। यह एक मानव इच्छा है जो व्यक्ति को अपने सपनों को पूरा करने और अपनी रूपरेखा को स्थापित करने की प्रेरणा प्रदान कराती है।

(ख) हमें अपने से छोटों की इच्छाओं का सम्मान करना चाहिए क्योंकि यह संबंधों में संवेदनशीलता और सहानुभूति को बढ़ावा देती है। यह सामाजिक और आत्मिक विकास की प्रक्रिया में मदद करती है और साथ ही सभी को अपनी अहमियत महसूस कराने में मदद करती है।

8. (क) छात्र स्वयं करें।

(ख) स्वतंत्र होने के लिए कठपुतलियों ने एकजुट होकर लड़ाई लड़ी होंगी क्योंकि सबकी परेशानी एक समान थी। उन्होंने विचार किया होगा और स्वतंत्र होने के बाद स्वावलंबी होने के लिए उन्होंने एकाग्रता, हिम्मत और धैर्य के साथ-साथ संघर्ष किया होगा। यदि उन्हें फिर से धागे में बाँधकर नचाने का प्रयास किया गया होगा तो उन्होंने मिलकर इसका विरोध किया होगा तथा अपनी इच्छा अनुसार एवं स्वतंत्रता के साथ आगे कदम बढ़ाए होंगे।

❑

14. ऐसे-ऐसे

❑ अभ्यास

1. (क) (ii) मोहन (ख) (i) 5 (ग) (ii) 10
(घ) (iii) मास्टरजी ने (ङ) (i) माँ

2. (क) धमा-चौकड़ी (ख) उठाए (ग) दीनानाथ
(घ) संतरा (ङ) मामूली

3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) मोहन नटखट स्वभाव का है। हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है। इसे छेड़, उसे पछाड़, इसके मुक्का, उसके थप्पड़। यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।

(ख) मोहन ने स्कूल का काम पूरा नहीं किया। इसलिए मोहन ने झूठ बोला।

(ग) माँ ने कहा कोई बड़ी खराब बीमारी है।

(घ) मोहन के बिना कक्षा में कोई रौनक ही नहीं रहेगी।

(ङ) मास्टरजी ने कहा, कुछ नहीं माता जी, मोहन ने महीनाभर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज ख्याल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा।

5. (क) मोहन की माँ जब उससे पूछती है कि उसे किस प्रकार की तकलीफ हो रही है तो मोहन ठीक से कुछ नहीं बताता, बस बोलता कि कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है। यह सुनकर उसकी माँ घबरा जाती है कि कहीं उसे कोई बड़ी बीमारी तो नहीं हो गई जो वह दर्द से इतना तड़प रहा है।

(ख) पेट दर्द, सिर दर्द, बुखार, माता-पिता के साथ कहीं जाना, माता-पिता द्वारा किसी काम के लिए कहा जाना, शादी में जाना, बस छूट जाने का बहाना, माँ की बीमारी का बहाना इत्यादि बहाने मास्टरजी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं।

(ग) (i) कई नई बीमारियाँ निकली हैं।
(ii) इन बीमारियों ने परेशान कर दिया है।
(iii) तुम बहुत चालाक हो।

(घ) संकट के समय के लिए आपातकालीन सेवा-112, पुलिस-100, फायर ब्रिगेड-101, एम्बुलेंस-102 नंबर याद रखे जाने चाहिए।

(ङ) हाँ, मेरे विचार से मास्टरजी बालक मन के पारखी निकले।

6. (क) नहीं/मना करना : रुद्र ने कपड़े अलमारी में नहीं रखे।
पूछना : क्या रुद्र ने कपड़े अलमारी में रखे?
आदेश देना : रुद्र कपड़े अलमारी में रखो।

(ख) **कारक**—'ने' कर्त्ता कारक।

(ग) विस्मयादिबोधक वाक्य।

(घ) यह प्रश्नवाचक वाक्य है।

(ङ) कुछ अंट-शंट का अर्थ—बदतमीजी, अप्रासंगिक।

7. (क) बहाना बनाकर परिजनों या अन्यों को परेशान करना नैतिक दृष्टि से सही नहीं है, क्योंकि यह संबंधों को बेहतर नहीं बना सकता है। खुले संवाद और सही उपायों की खोज करना संबंधों को मजबूत बनाए रखने में मदद कर सकता है।

(ख) सम्मानजनक स्थिति प्राप्त करने के लिए धन महत्त्वपूर्ण है। धन को एक साधन के रूप में देखना और उसे सही दिशा में इस्तेमाल करना संतुलित और सकारात्मक जीवन की दिशा में मदद कर सकता है।

8. (क) छात्र स्वयं करें। (ख) छात्र स्वयं करें। ❑

15. हमारी ख्वाहिश

❐ अभ्यास

1. (क) (iii) आसमाँ को (ख) (ii) बिस्मिल के
(ग) (ii) कत्लगाह में

2. (क) देखना (ख) मकतल (ग) निसार

3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (iii)

4. (क) तेरे बलिदान की चर्चा गैर की महफिल में है।

(ख) रामप्रसाद बिस्मिल कविता के माध्यम से कहते हैं कि हम अपनी तमन्ना वक्त आने पर बताएँगे।

(ग) ''सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है'' अर्थात् हमारे दिल में उत्साह और संकल्प है कि हम अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहेंगे और अपने प्रयासों के साथ उन्हें पूरा करेंगे।

5. (क) कत्लगाह में रामप्रसाद बिस्मिल कह रहे हैं कि शहादत की तमन्ना हमारे दिल में है।

(ख) कविता में कहा गया है, ''देखना है जोर कितना, बाजू-ए-कातिल में है'' अर्थात् हमारी तैयारी और हमारी हिम्मत का जोर देखना है।

6. (क) **कारक**—'में' अधिकरण कारक।
सर्वनाम—ये।

(ख) **संज्ञा**—भीड़।
समुच्चयबोधक शब्द—'और'।

7. (क) देशभक्ति के लिए बलिदान करना गौरव की बात है क्योंकि इससे व्यक्ति को अपने देश के लिए समर्पित होने का अवसर मिलता है। इससे समाज में एकता, उत्साह और समृद्धि का वातावरण बनता है जो एक विकसित और मजबूत राष्ट्र की दिशा में सहारा प्रदान करता है।

(ख) देश की आजादी के लिए हुए शहीदों से हमें साहस और देशभक्ति का सीधा संदेश मिलता है। उनका बलिदान हमें यह सिखाता है कि देश के लिए सेवा महत्त्वपूर्ण है। इससे हमें सामरिक एकता और समृद्धि की दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण मिलता है।

8. (क) छात्र स्वयं करें। (ख) छात्र स्वयं करें। ❑

16. संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिजाज हो गया : धनराज

❐ अभ्यास

1. (क) (ii) पुणे (ख) (iii) 1985 (ग) (i) 1986
(घ) (ii) 1988 (ङ) (i) अरमाडा (च) (i) 1994
(छ) (iii) 1999 में

2. (क) हॉकी (ख) 16 (ग) 57 (घ) 2000 (ङ) कविता

3. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (ii)

4. (क) एक फोटोग्राफर ने एक भीड़ से भरे रेलवे स्टेशन पर मेरी तसवीर खींचकर अगली सुबह अखबार में यह खबर छाप दी कि 'हॉकी का सितारा पिल्लै अभी भी मुंबई की लोकल ट्रेनों में सफर करता है।'

(ख) पिल्लै की पहली प्राथमिकता थी परिवार में आर्थिक तंगी को दूर करना और उन सबको एक बेहतर जिंदगी देना।

(ग) पिल्लै की आदर्श एवं प्रेरणा उसकी माँ तथा बड़ी भाभी कविता थी।

(घ) पिल्लै ने जूनियर राष्ट्रीय हॉकी सन् 1985 में मणिपुर में खेली।

5. (क) धनराज पिल्लै का साक्षात्कार पढ़कर यही छवि उभरती है कि वे सीधा-सरल जीवन व्यतीत करने वाले मध्यमवर्गीय परिवार से नाता रखने वाले हैं। वे देखने में बहुत सुंदर नहीं हैं। हॉकी के खेल में इतनी प्रसिद्धि प्राप्त करने का जरा भी अभिमान उनमें नहीं है। आम लोगों की भाँति लोकल ट्रेनों में सफर करने में भी कतराते नहीं। विशेष लोगों से मिलकर बहुत प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। उन्हें माँ से बहुत लगाव है। इतनी प्रसिद्धि पाने पर भी आर्थिक समस्याओं से जूझते रहे। उन्हें हॉकी खेल से बहुत लगाव है। लोग भले ही उनको तुनुकमिजाज समझें लेकिन वे बहुत सरल हृदय वाले मनुष्य हैं।

(ख) धनराज पिल्लै का बचपन काफी आर्थिक संकटों के बीच गुजरा है। उन्होंने गरीबी को काफी करीब से देखा है। धनराज पिल्लै ने जमीन से उठकर आसमान का सितारा बनने तक का सफर तय किया है। उनके पास अपने लिए एक हॉकी स्टिक तक खरीदने के पैसे नहीं थे। शुरुआत में मित्रों से उधार लेकर और बाद में अपने बड़े भाई की पुरानी स्टिक से उन्होंने काम चलाया आखिरकार उनकी मेहनत रंग लाई। अंत में मात्र 16 साल की उम्र में उन्हें मणिपुर में 1985 में जूनियर राष्ट्रीय हॉकी खेलने का मौका मिला। इसके बाद इन्हें सन् 1986 में सीनियर टीम में स्थान मिला। उस वर्ष अपने बड़े भाई के साथ मिलकर उन्होंने मुंबई लीग में अपने बेहतरीन खेल से खूब धूम मचाई।

अंतत: 1989 में उन्हें ऑलविन एशिया कप कैंप के लिए चुना गया। उसके बाद वे लगातार सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ते रहे और उन्होंने फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

(ग) धनराज पिल्लै का यह कहना, 'मेरी माँ ने मुझे अपनी प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी है', का तात्पर्य है कि मनुष्य चाहे कितनी भी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ जाए उसे कभी घमंड नहीं करना चाहिए और किसी को अपने से छोटा नहीं समझना चाहिए। माँ की इसी सीख को उन्होंने जीवन में अपनाया है।

(घ) ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर कहा जाता है। वे वैश्विक पटल के हॉकी खेल के खिलाड़ी थे। उनका जन्म 29 अगस्त, 1905 को हुआ था। वे भारतीय हॉकी टीम के भूतपूर्व खिलाड़ी और कप्तान थे। वे भारत और विश्व स्तर पर हॉकी के लिए मशहूर थे। वे ओलम्पिक में तीन बार स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य रहे हैं। वे और उनकी टीम 1928 का एम्सटर्डम ओलम्पिक, 1932 का लॉस एंजेल्स ओलम्पिक एवं 1936 का बर्लिन ओलम्पिक में भी शामिल हुए थे। उनकी जन्मतिथि को भारत में ''राष्ट्रीय खेल दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। वे हमेशा टक्कर देने वाले प्रतिद्वंदी थे। उन्होंने अपने खेल के प्रति निष्ठा और ईमानदारी को कभी खोने नहीं दिया। उनकी कलाकारी से मोहित होकर ही जर्मनी के रूडोल्फ हिटलर ने उन्हें जर्मनी की ओर से खेलने के लिए पेशकश का वादा किया था। किंतु उन्होंने वह स्वीकार नहीं किया। वे हमारे राष्ट्रीय खेल में जादूगरी बिखेरने वाले खिलाड़ी थे।

(ङ) हॉकी का खेल काफ़ी पहले जमाने से भारत में खेला जाता रहा है। इसे राजा-महाराजाओं से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी बड़े चाव से खेला करते थे। आज भी इस खेल के प्रति रुचि देश एवं विदेशों में बनी हुई है। इस खेल को खेलने में अधिक पैसों की जरूरत नहीं पड़ती है। पुराने जमाने के लोग पेड़ों की टहनियों से इस खेल को खेला करते थे। यह खेल वर्षों से लगातार आगे ही बढ़ता जा रहा है। यह सीमित संसाधन में खेला जाने वाला खेल है। इसलिए इसे भारत का राष्ट्रीय खेल माना जाता है।

6. (क) प्रेरणा—गाँधी जी हमें प्रेरणा देते हैं।
प्रेरक—गाँधी जी एक प्रेरक व्यक्ति हैं।
प्रेरित—मैं गाँधी जी के विचारों से प्रेरित होती हूँ।
सम्भव—बारिश में स्कूल जाना संभव है।
संभावित—संभावित है कि कल बारिश होगी।
संभवत:—आज यह कार्य संभवत: पूर्ण नहीं होगा।
उत्साह—अगली कक्षा में जाने का बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है।
उत्साहित—मैं कल के पिकनिक के लिए बहुत उत्साहित हूँ।
उत्साहवर्धक—श्रोताओं की तालियाँ, कलाकारों के लिए उत्साहवर्धक होती हैं।

(ख) **इच्छा**—चाह, अभिलाषा, कामना, आकांक्षा
फूल—पुष्प, कुसुम, सुमन
पुत्री—बेटी, बिटिया, सुता
जल—पानी, जल, नीर

(ग) **कारक**—'से' करण कारक।
काल—भूतकाल।

(घ) इस वाक्य में 'चेहरा' विशेष्य है।

(ङ) **समुच्चयबोधक शब्द**—'और'
संज्ञा शब्द—कविता, माँ
सर्वनाम शब्द—वह, मेरी, मेरे

7. (क) हाँ, यह संभव है कि जीवट का धनी और जुझारू व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। लेकिन सफलता की परिभाषा व्यक्ति के व्यक्तिगत मूल्यांकन के आधार पर भिन्न हो सकती है।

(ख) (i) अपनी गलतियों के लिए माफी माँगना मुश्किल तब तक होता है, जब तक गलती का एहसास न हो जाए। अगर एक बार गलती स्वीकार कर ली, फिर माफी माँगे बिना चैन नहीं मिलता है।

(ii) मेरे आसपास के कुछ लोग अपनी गलती की माफी माँगते हैं। वहीं कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अपनी गलती को नहीं स्वीकारते हैं।

(iii) मेरे अनुभव के आधार पर माफ करना ज्यादा मुश्किल होता है। क्योंकि अगर कोई आपको मानसिक यातना देता है, उस यातना को भूल कर माफ करना बहुत कठिन है।

8. (क) छात्र स्वयं करें।

(ख) हम धनराज पिल्लै के इस बात से सहमत हैं कि कोई जरूरी नहीं कि शोहरत पैसा भी साथ लेकर आए। उनका यह कथन बिल्कुल सच है क्योंकि धनराज को स्वयं जितनी शोहरत मिली उतना पैसा प्राप्त नहीं हुआ। वे काफी समय तक आम लोगों की भाँति लोकल ट्रेनों में सफर करते रहे, जिसे देखकर लोग हैरान होते थे। हमारे देश में कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें प्रसिद्ध व्यक्तियों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा है। मसलन प्रेमचंद, मशहूर शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का उदाहरण ले सकते हैं। इन जैसे महान व्यक्तियों का जीवन आर्थिक तंगी के बीच व्यतीत हुआ है। ❑

17. रहीम के दोहे

❑ अभ्यास

1. (क) (ii) विपत्ति में (ख) (i) मछली (ग) (iii) पेड़
(घ) (i) सज्जन (ङ) (ii) धनी

2. (क) धरती (ख) बादर (ग) मीनन (घ) खात (ङ) कसौटी

3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (iii)

4. (क) सच्चे मित्र की पहचान तब होती है जब विपत्ति की कसौटी पर कसे जाने पर खरे उतरते हैं। इस प्रकार विपत्ति में जो हर तरह से साथ देता है, वही सच्चा मित्र है।

(ख) तरुवर (पेड़) अपने फल नहीं खाता है।

(ग) सरवर (सरोवर या तालाब) अपना पानी नहीं पीता।

(घ) थोथे बादल क्वार (आश्विन) मास के होते हैं। क्वार मास में आकाश में बिना पानी के खाली बादल केवल गरजते हैं, बरसते नहीं।

5. (क) **कथन वाले दोहे**

(i) जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊन छाँड़ति छोह।।

(ii) कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

उदाहरण वाले दोहे

(i) थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात।।

(ii) धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।

(ख) रहीम ने आश्विन (क्वार) के महीने में आसमान में छाने वाले बादलों की तुलना निर्धन हो गए धनी व्यक्तियों से इसलिए की है, क्योंकि दोनों गरजकर रह जाते हैं, कुछ कर नहीं पाते। बादल बरस नहीं पाते, निर्धन व्यक्ति का धन लौटकर नहीं आता। जो अपने बीते हुए सुखी दिनों की बात करते रहते हैं, उनकी बातें बेकार और वर्तमान परिस्थितियों में अर्थहीन होती हैं। दोहे के आधार पर सावन के बरसने वाले बादल धनी तथा क्वार के गरजने वाले बादल निर्धन कहे जा सकते हैं।

(ग) (i) इस दोहे के माध्यम से रहीम यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल नहीं खाते और सरोवर अपना जल नहीं पीते, उसी प्रकार सज्जन अपना संचित धन अपने लाभ के लिए उपयोग नहीं करते। उनका धन दूसरों की भलाई में खर्च होता है। यदि हम इस सच्चाई को अपने जीवन में उतार लें, अर्थात् अपना लें तो अवश्य ही समाज का कल्याणकारी रूप हमारे सामने आएगा और राष्ट्र सुंदर रूप से विकसित होगा।

(ii) इस दोहे के माध्यम से रहीम यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि मनुष्य को धरती की भाँति सहनशील होना चाहिए। यदि हम सत्य को अपनाएँ

तो हम जीवन में आने वाले सुख-दुख को सहज रूप से स्वीकार कर सकेंगे। अपने मार्ग से कभी विचलित नहीं होंगे। हम हर स्थिति में संतुष्ट रहेंगे। हमारे मन में संतोष की भावना आएगी।

6. (क)

रहीम की भाषा		**हिंदी के शब्द**
बिपति	—	विपत्ति
मछरी	—	मछली
बादर	—	बादल
सीत	—	शीत

(ख) **कारक**—'की' संबंध कारक।

(ग) **मछरी का अर्थ**—मछली।

(घ) यह प्रश्नवाचक प्रश्न है।

7. (क) परोपकार जीवन की अमूल्य निधि है, क्योंकि यह हमें आत्मिक संबंध और सामाजिक सहानुभूति का अहसास कराता है। यह न सिर्फ दूसरों के लिए उपयुक्त है, बल्कि हमारे खुद के जीवन में भी आनंद और संतुष्टि का स्रोत बनता है। इससे सहयोग की भावना बढ़ती है, जो एक समृद्ध समाज की स्थापना में मदद करता है।

(ख) हमें अपने अतीत को सीख के रूप में देखकर वर्तमान में सुधार करना चाहिए, लेकिन प्रशंसा से बचना हमें स्वयं को निर्मल और संतुलित बनाए रखने में मदद कर सकता है।

8. (क) छात्र स्वयं करें। (ख) छात्र स्वयं करें।

❑

18. वीर कुँवर सिंह

❑ अभ्यास

1. (क) (ii) नाव से (ख) (iii) बायाँ हाथ
(ग) (i) 22 मार्च, 1858 (घ) (ii) 23 अप्रैल, 1858
(ङ) (iii) 27 जुलाई, 1857 (च) (ii) 1857
(छ) (i) 1782

2. (क) 1827 (ख) संत (ग) 8 (घ) दिल्ली (ङ) फारसी

3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (iii)

4. (क) दिल्ली के अतिरिक्त जहाँ अत्यधिक भीषण युद्ध हुआ, वे केंद्र थे—कानपुर, लखनऊ, बरेली, बुंदेलखंड और आरा।

(ख) 1857 ने विद्रोह के मुख्य नेताओं में नाना साहब, ताँत्या टोपे, बख्त खान, अजीमुल्ला खान, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, कुँवर सिंह, मौलवी अहमदुल्लाह, बहादुर खान और राव तुलाराम थे।

(ग) कुँवर सिंह के माता का नाम पंचरतन कुँवर तथा पिता का नाम साहबजादा सिंह था।

(घ) कुँवर सिंह को हिंदी, संस्कृत और फारसी भाषाएँ आती थीं।

(ङ) कुँवर सिंह ने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं।

(च) कुँवर सिंह 1845 से 1846 तक काफी सक्रिय रहे और गुप्त ढंग से ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की योजना बनाते रहे।

(छ) सोनपुर मेले को अपनी गुप्त बैठकों की योजना के लिए इसलिए चुना गया, क्योंकि ऐतिहासिक मेले में उन दिनों स्वाधीनता के लिए लोग एकत्र होकर क्रांति के बारे में योजना बनाते थे।

5. (क) वीर कुँवर सिंह के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ हमें प्रभावित करती हैं—

1. **वीर सेनानी**—कुँवर सिंह महान वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। कुँवर सिंह की वीरता पूरे उत्तर भारत द्वारा भुलाई नहीं जा सकती। आरा पर विजय प्राप्त करने में इन्हें फौजी सलामी भी दी गई।
2. **स्वाभिमानी**—इन्होंने वीरता के साथ-साथ स्वाभिमानी की भी मिसाल दी। जब वे शिवराजपुर से गंगा पार करते हुए जा रहे थे तो डगलस की गोली का निशाना बन गए। उनके हाथ पर गोली लगी। उस समय वे न तो वहाँ से भागे और न ही उपचार की चिंता की, बल्कि हाथ ही काटकर गंगा में बहा दिया।
3. **उदार स्वभाव**—वे अत्यधिक उदार स्वभाव के थे। किसी प्रकार का कोई जातिगत भेदभाव उनमें न था। यहाँ तक कि उनकी सेना में इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन मुसलमान होते हुए भी उच्च पदों पर आसीन थे। वे हिंदू-मुसलमान दोनों के त्योहार सबके साथ मिलकर मनाते थे।

(ख) वीर कुँवर सिंह को बचपन में पढ़ाई-लिखाई से ज्यादा घुड़सवारी करने, तलवारबाजी करने तथा कुश्ती लड़ने में मजा आता था। जब बड़े होकर स्वतंत्रता सेनानी बने तो इन कार्यों से उन्हें बहुत सहायता मिली। तलवार चलाने व तेज घुड़सवारी से तो वे कदम-कदम पर अंग्रेजों को मात देते रहे।

(ग) कुँवर सिंह की साम्प्रदायिक सद्भाव में गहरी आस्था थी। उनकी सेना में मुसलमान भी उच्च पदों पर थे। इब्राहीम खाँ तथा किफायत हुसैन उनकी सेना में उच्च पदों पर आसीन थे। उनके यहाँ हिंदुओं तथा मुसलमानों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता था। उनके यहाँ दोनों धर्मों के त्योहार एक साथ मनाए जाते थे। इतना ही नहीं उन्होंने पाठशालाओं के साथ मकतबों का भी निर्माण कराया।

(घ) कुँवर सिंह बचपन से ही साहसी थे। उनके बचपन के शोक से यह जान पाना बहुत आसान है कि उन्हें उदार मनुष्य कहना उचित होगा क्योंकि उन्होंने सभी

के लिए स्कूल, तालाब, रास्ते भी बनवाए और किसी के साथ भेदभाव नहीं किया। वह स्वाभिमानी व्यक्ति थे, वह बूढ़े शूरवीर की अवस्था में भी युद्ध के लिए तत्पर रहते थे।

(ङ) प्राय: मेले का उपयोग मनोरंजन, खरीद-फरोख्त तथा मेलजोल के लिए किया जाता है, लेकिन कुँवर सिंह ने सोनपुर के मेले का उपयोग स्वाधीनता संग्राम की योजना बनाने के लिए किया। उन्होंने यहाँ सोनपुर के मेले का उपयोग अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी बैठकों एवं योजनाओं के लिए किया। यहाँ लोग गुप्त रूप से इकट्ठे होकर क्रांति के बारे में योजनाएँ बनाते थे। सोनपुर में एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला लगता है।

6. (क)

नीति	—	नीतियों
जिम्मेदारियों	—	जिम्मेदारी
सलामी	—	सलामियों
स्थिति	—	स्थितियों
स्वाभिमानियों	—	स्वाभिमानी
गोली	—	गोलियाँ

(ख) **कारक**—'में' अधिकरण कारक और 'के लिए' सम्प्रदान कारक।

(ग) **कूच करना मुहावरे का अर्थ**—चले जाना, प्रस्थान करना।

(घ) **लोहा लेना मुहावरे का अर्थ**—लड़ाई करना।
वाक्य प्रयोग—शिवाजी ने मुगलों से लोहा लिया।
जंगल की आग मुहावरे का अर्थ—तेजी से फैलना।
वाक्य प्रयोग—1857 का विद्रोह जंगल की आग की भाँति दूर-दूर तक फैल गया।

(ङ) **संवेदनशील का अर्थ**—आसानी से प्रभावित
शिक्षक को बच्चे की जरूरतों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

7. (क) देश प्रेम हमारे जीवन में समृद्धि, एकता और सामाजिक संबंधों को मजबूती प्रदान करता है। यह सामाजिक सहयोग, साझेदारी और गर्व की भावना पैदा करके राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(ख) देश पर बलिदान होने वाले पाँच वीरों के नाम—(i) वीर कुँवर सिंह (ii) बेगम हजरत महल (iii) मंगल पांडे (iv) रानी लक्ष्मीबाई (v) ताँत्या टोपे।

8. (क) (i) (अ) **रानी लक्ष्मीबाई**—झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई स्वाधीनता संग्राम की प्रथम महिला थीं, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई थी। वह स्वाभिमानिनी, कुशल योद्धा, कुशल प्रशासिका, विदुषी, भगवत गीता के सिद्धांतों को मानने वाली थी। अंग्रेजों से अंत तक लड़ती रही। लड़ते-लड़ते 23 वर्ष की अल्पायु में वीरगति को प्राप्त हो गई।

(ब) **मंगल पांडे**—अंग्रेजी सेना का सिपाही मंगल पांडे कट्टर धर्मावलंबी था। कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी लगे होने की खबर फैलने के बाद उन्होंने विद्रोह की शुरुआत की थी।

(स) **ताँत्या टोपे**—ताँत्या टोपे का मूल नाम रामचंद्र पांडुरंग था। ये झाँसी की रानी की सेना में सेनापति थे। इन्हें 18 अप्रैल, 1859 को फाँसी पर लटका दिया गया था।

(द) **बहादुर शाह जफर**—मई, 1857 में विद्रोहियों ने दिल्ली पर कब्जा करके बहादुर शाह द्वितीय को पुन: भारत का सम्राट घोषित कर दिया। 82 वर्षीय बहादुर शाह ने बख्त खाँ के सहयोग से विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्हें अपना शेष जीवन रंगून के जेल में बिताना पड़ा।

(ii) सन् 1857 से संबंधित गीत—

हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा,
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा,
ये है हमारी मिलकियत, हिन्दुस्तान हमारा,
इसकी रूहानियत से रोशन है, जग सारा।
कितनी कदीम, कितनी नईम, सब दुनिया से न्यारा,
करती है, जरखेज जिसे, गंग ओ जमुन की धारा,
ऊपर बर्फीला परवत, पहरेदार हमारा।

(ख) (i) वीर कुँवर सिंह का पढ़ने के साथ-साथ कुश्ती और घुड़सवारी में बहुत मन लगता था उसी प्रकार मेरी भी बहुत गतिविधियाँ हैं या काम हैं, जिसमें मुझे खूब मजा आता है या मैं उसमें खूब रुचि लेती हूँ; जैसे—नाचना, बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना तथा घर के काम करना या खाना पकाना आदि इन सब गतिविधियों में मुझे खूब आनंद आता है।

(ii) 1857 में यदि मैं 12 वर्ष का होता तो अवश्य वीर सेनानियों के कार्यों से प्रभावित होता। मैं भी तलवार चलाना व घुड़सवारी आदि सीखता ताकि बड़ा होकर सैनिक बन पाता। लोगों में देश-प्रेम की भावना जागृत करने का भी प्रयास करता।

(iii) स्वाधीनता की योजना बनाने के लिए सोनपुर के मेले को इसलिए चुना गया होगा कि सोनपुर का मेला एशिया का सबसे बड़ा मेला है। इसमें काफी भीड़ होती है तथा तरह-तरह के हाथियों की खरीद-बिक्री की जाती है। इस मेले में इतनी भीड़ होती थी कि यदि स्वतंत्रता सेनानी यहाँ कोई योजना बनाने के लिए इकट्ठे हो जाएँ तो अंग्रेजी सरकार को कभी शक नहीं हो सकता था।

❑

19. गुरु और चेला

❐ अभ्यास

1. (क) (i) ग्वालिन से (ख) (ii) गुरु ने (ग) (i) दीवार
(घ) (ii) मंत्री (ङ) (i) राजा

2. (क) पटापट (ख) फटाफट (ग) झकाझक (घ) चटपट
(ङ) चकाचक

3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (i)

4. (क) संतरी ने कारीगर की खता बतायी।
(ख) कारीगर ने भिश्ती की खता बतायी।
(ग) चेले ने फाँसी से पहले कहा कि पहले मुझे गुरुजी के दर्शन कराओ उसके बाद फाँसी चढ़ाना।
(घ) गुरु जी ने चेले के कान में कुछ मंत्र गुनगुनाया। इसलिए गुरु और चेले झगड़ने लगे।
(ङ) मूर्ख राजा अंत में फाँसी पर चढ़ा; क्योंकि गुरुजी ने राजा से कहा था कि यह मुहूर्त फाँसी पर चढ़ने के लिए सबसे शुभ है। इस मुहूर्त में जो फाँसी पर चढ़ेगा वह चक्रवर्ती राजा बनेगा और उसके सिर पर पूरे संसार का छत्र होगा।

5. (क) अगर आजकल सब चीजें एक रुपया किलो मिलने लगें, तो इससे सारी जनता को फायदा होगा, क्योंकि उन्हें चीजें एक रुपया किलो में मिलने लगेंगी। लेकिन वहीं दुकानदारों तथा विक्रेताओं को नुकसान होगा, क्योंकि उन्हें हर चीज एक रुपया किलो बेचनी पड़ेगी जिससे उन्हें कोई फायदा नहीं होगा।

(ख)

देश	**सऊदी अरब**	**जापान**	**फ्रांस**	**इटली**	**इंग्लैंड**
मुद्राएँ	दीनार	येन	यूरो	यूरो	पांउड-स्टर्लिंग

(ग) **अंधेर नगरी के बारे में कुछ वाक्य—**
(i) अंधेर नगरी की सड़कें चमकदार थीं।
(ii) अंधेर नगरी में सभी चीजें टके सेर भाव में मिलती थी।
(iii) अंधेर नगरी में कोई नियम नहीं था।
(iv) अंधेर नगरी में किसी के दोष की सजा किसी और को मिलती थी।
(v) अंधेर नगरी में खूब बारिश होती थी और बिजली चमकती थी।

(घ) (i) मूर्ख को कोई नहीं चाहता क्योंकि वह हमेशा लोगों की परेशानी का कारण बनता है। अंधेर नगरी की प्रजा राजा के मरने पर इसलिए खुश हुई क्योंकि वह मूर्ख था। उसके मरने से उनकी वर्षों की तमन्ना पूरी हुई। वे राजा की मूर्खतापूर्ण शासन-व्यवस्था से बड़े दुखी थे। अब उनके दुख का अंत हो गया।

(ii) उन्होंने ऐसे राजा को खुद इसलिए नहीं हटाया क्योंकि यह काम आसान नहीं था। इस काम को सफलतापूर्वक करने के लिए उन्हें किसी योग्य व्यक्ति के नेतृत्व में एकजुट होना पड़ता। सबको एकजुट करना भी मुश्किल काम होता है और यदि काम हो भी जाए तो काफी समय लगता है।

(ङ) (i) गुरुजी ने कहा था कि यह मुहूर्त फाँसी पर चढ़ने के लिए शुभ है।

(ii) राजा गुरुजी की बात सुनकर फाँसी पर लटक गया। लेकिन गुरुजी ने जो बात कही थी, वह सच नहीं थी।

(iii) गुरुजी ने यह बात कहकर सही किया, क्योंकि इस झूठ से उन्होंने अपने बेगुनाह चेले की जान बचाई थी।

6. (क) (i) छन — क्षण

(ii) भग — भाग

(iii) घनी — गहरी

(iv) बिरानी — परायी

(v) महूरत — मुहूर्त

(ख) **समुच्चयबोधक शब्द**—'और'।

(ग) यह प्रश्नवाचक वाक्य है।

(घ) छन का अर्थ क्षण (समय) तथा मन का अर्थ हृदय से है अर्थात् छन-मन का अर्थ हृदय की इच्छा से है।

(ङ) इस वाक्य में मानवीकरण अलंकार है।

(च) **संज्ञा शब्द**—संतरी, महाराज साहब और दीवार।

सर्वनाम शब्द—इसमें, मेरा, मेरी, यह, इसी।

विशेषण शब्द—कमजोर, मोटी।

कारक—'ने' कर्त्ता कारक और 'से' अपादान कारक।

7. (क) हमें अपने बड़ों और गुरुजनों की बातों को मानना चाहिए, क्योंकि उनमें अनुभव और ज्ञान होता है जो हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में मार्गदर्शन कर सकता है। उनकी सलाह और अनुभव हमें अपने निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं और समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं।

(ख) लालच से बचना जरूरी है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपने मूल्यों से दूर कर देता है और न्याय की भावना को कमजोर कर देता है। ऐसी जगह जहाँ न्याय का शासन नहीं है, वहाँ ठहरना उचित नहीं है, क्योंकि वहाँ व्यक्ति को अन्याय का सामना करना पड़ सकता है, सही मार्ग पर चलना मुश्किल हो सकता है।

8. छात्र स्वयं करें।

9. हाँ, ऐसे देश को 'अंधेर नगरी' कहना ठीक है। क्योंकि यहाँ की शासन व्यवस्था और सजा देने का तरीका गलत था। चारों ओर अज्ञानता का वातावरण था। यहाँ का राजा महामूर्ख था। ❑

20. नीलकंठ

❐ अभ्यास

1. (क) (i) नीलकंठ (ख) (iii) मोरनी का (ग) (iii) 7 रुपये
(घ) (ii) कजली ने (ङ) (ii) राधा

2. (क) पंजों (ख) नृत्य (ग) मर (घ) दूर (ङ) प्रतीक्षा

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) लेखिका के कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा।
(ख) मोर ने खरगोश के बच्चे को साँप से छीन लिया।
(ग) मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक मात्र नहीं।
(घ) कुब्जा नीलकंठ और राधा को साथ देखते ही मारने को दौड़ती।
(ङ) नीलकंठ को लेखिका ने गंगा के बीच धार में प्रवाहित किया।
(च) कुब्जा नीलकंठ को आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में ढूँढती रहती थी।

5. (क) मोर की गर्दन बहुत सुंदर और नीली थी इसलिए मोर का नाम नीलकंठ रखा गया तथा मोरनी सदा उसके साथ उसकी छाया की तरह रहती थी इस आधार पर उसका नाम राधा रखा गया।

(ख) मोर के शावकों को जब जाली के बड़े घर में पहुँचाया गया तो दोनों का स्वागत ऐसे किया गया जैसे नव वधू के आगमन पर किया जाता था। लक्का कबूतर नाचना छोड़ उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूं-गुटरगूं करने लगा, बड़े खरगोश गंभीर भाव से कतार में बैठकर उन्हें देखने लगे। छोटे खरगोश उनके आसपास उछल-कूद मचाने लगे। तोते एक आँख बंद करके उन्हें देखने लगते हैं।

(ग) लेखिका को नीलकंठ की निम्नलिखित चेष्टाएँ बहुत भाती थी—

(i) नीलकंठ बहुत दयालु स्वभाव के थे तथा वह हमेशा सबकी रक्षा करते थे।

(ii) वर्षा ऋतु के समय नीलकंठ अपने पंख फैलाकर नाचते तथा राधा उनका साथ देती थी यह बात लेखिका को बहुत भाती थी। शायद नीलकंठ को इस बात का अंदाजा हो गया था इसलिए जब भी लेखिका आती तो नीलकंठ नाचने की मुद्रा में खड़ा हो जाता था।

(iii) नीलकंठ को पता था कि किसके साथ कैसा व्यवहार करना है उन्होंने खरगोश के बच्चों को खाने के लिए आए साँप के टुकड़े कर दिए थे, जब लेखिका के हाथ से भूने हुए चने खाते थे तो वह उनको तनिक भी नुकसान नहीं पहुँचाते थे।

(iv) इसके अतिरिक्त नीलकंठ का गर्दन उठाकर इधर-उधर देखना, सिर तिरछा करके बात सुनना और गर्दन झुकाकर दाना चुगना और पानी पीना भी भाता था।

(घ) इस आनंदोत्सव से रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह वाक्य उस घटना की ओर संकेत कर रहा है जब लेखिका ने बड़े मियाँ से एक अधमरी मोरनी खरीदी और उसे घर ले गई। उसका नाम कुब्जा रखा। उसे नीलकंठ और राधा का साथ रहना नहीं भाया। वह नीलकंठ के साथ रहना चाहती थी जबकि नीलकंठ उससे दूर भागता था। कुब्जा ने राधा के अंडे तोड़कर बिखेर दिए। इससे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया क्योंकि राधा से दूरी बढ़ गई थी। कुब्जा ने नीलकंठ के शांतिपूर्ण जीवन में ऐसा कोलाहल मचाया कि बेचारे नीलकंठ का अंत ही हो गया।

(ङ) वसंत ऋतु में जब आम के वृक्ष सुनहरी मंजरियों से लद जाते थे और अशोक के वृक्ष नए पत्तों से भर जाते थे तब नीलकंठ जालीघर में अस्थिर हो जाता था। वह वसंत ऋतु में जालीघर में बंदी होकर नहीं रह सकता था उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे। तब उसे बाहर छोड़ देना पड़ता था।

(च) जालीघर में रहनेवाले सभी जीव-जंतु एक-दूसरे के मित्र बन गए, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव नहीं हो पाया, क्योंकि कुब्जा किसी से मित्रता करना नहीं चाहती थी। वह सबसे लड़ती रहती थी, उसे केवल नीलकंठ के साथ रहना पसंद था। वह और किसी को उसके पास नहीं जाने देती थी। किसी को उसके साथ देखते ही वह चोंच से मारना शुरू कर देती थी।

(छ) एक दिन बाड़े में से कहीं साँप घुस आया उसने खेलते खरगोश के बच्चे को मारने के लिए पीछे से जकड़ लिया, बच्चा चींचीं करने लगा। इस कंदर्न की आवाज सुनकर नीलकंठ की आँखें खुली और झूले से नीचे उतरे, उन्होंने साँप को गर्दन से बड़ी ही सतर्कता से पकड़ा और तब तक अपनी चोंच से वार किया जब तक वह अधमरा नहीं हो गया, इस तरह बच्चे की जान बचाई गई।

इस घटना के आधार पर नीलकंठ की निम्न विशेषताओं का ज्ञान होता है—

1. नीलकंठ बाड़े का एक सजग और सचेत मुखिया था। जिस प्रकार घर के मुखिया सबका ध्यान रखते हैं उसी प्रकार नीलकंठ भी सबका ध्यान रखते थे।
2. नीलकंठ समझदार थे जिस प्रकार उन्होंने समझदारी से साँप को जकड़ा उससे खरगोश का बच्चा बच गया।
3. नीलकंठ बहुत साहसी थे, उन्होंने जल्दी से बिना डरे साँप को पकड़ा और बच्चे को सुरक्षित बचा लिया।

6. (क)

गंध	—	सुगंध, दुर्गंध, गंधहीन।
रंग	—	रंगना, रंगीला, नौरंग।
फल	—	सफल, फलदार, फलित।
ज्ञान	—	अज्ञान, ज्ञानवान, अज्ञानी।

(ख)

संधि	विग्रह
नील + आभ—नीलाभ	सिंहासन—सिंह + आसन
नव + आगंतुक—नवागंतुक	मेघाच्छन्न—मेघ + आछन्न

(ग) **नवागंतुक का अर्थ**—नया आया हुआ।

वाक्य प्रयोग—छात्रावास में नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत किया जाता है।

(घ) **कारक**—'के' तथा 'की' संबंध कारक।

संज्ञा शब्द—मोर, सिर।

सर्वनाम शब्द—इस वाक्य में सर्वनाम शब्द नहीं है।

समुच्चयबोधक शब्द—'और'।

(ङ) 'गुटरगूँ-गुटरगूँ' कबूतर की आवाज के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(च) यह प्रश्नवाचक वाक्य है।

(छ) 'ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश' में 'ऊन की गेंद' उपमा है जो किसी अन्य वस्तु की तुलना के लिए प्रयुक्त होती है और 'छोटे खरगोश' उपमेय है जिसकी तुलना की जा रही है।

(ज) इस वाक्य में 'गोल' और 'नीलाभ' विशेषण शब्द हैं।

(झ) सुकुमारता शब्द में 'सु' उपसर्ग है।

7. (क) हाँ, मेरे मन में भी पक्षियों के प्रति दया एवं प्रेम भाव है।

(ख) पशु-पक्षी और इंसानों के प्रति सच्चा प्रेम जीवन को सार्थक बनाता है, क्योंकि यह न केवल हमें जीवों के साथ संबंधित करता है, बल्कि यह हमारी दया और साझेदारी की भावना को उत्तेजित करता है। इस प्रेम से ही हम सभी जीवों के साथी बनते हैं और प्राकृतिक संतुलन की रक्षा का अहसास होता है।

8. (क) निबन्ध में यह भाव चित्र उस समय का है जब लेखिका नीलकंठ के मृतक शरीर को गंगा की बीच धारा में प्रवाहित करने जाती है। मोर के पंख की चंद्रीकाएँ सुनहरे और गहरे रंग की होती हैं। जब लेखिका नीलकंठ के शरीर को जल में प्रवाहित करती है तो उनके पंख पानी में फैलकर तैरने लगते हैं। नदी की लहरों पर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं तो आँख और भी ज्यादा चमकने लगती हैं और मानो ऐसा लगता है कि गंगा का एक चोड़ा पाट मयूर के समान तरंगित हो उठा।

(ख) मेघों के घिरते ही नीलकंठ के पाँव थिरकने लगते हैं। जैसे-जैसे वर्षा तीव्र से तीव्रतर होती उनके पाँवों में शक्ति आ जाती और नृत्य तेजी से होने लगता जो अत्यंत मनोहारी होता। नीलकंठ के पंख फैलाते ही इंद्रधनुष का दृश्य साकार हो उठता।

❑

अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

(अध्याय 1 से 10 तक)

1. (क) (i) गिरधर नागर (ख) (i) 2 पैसे में
(ग) (ii) गुजरात (घ) (ii) समुद्र

2. (क) पोलियो (ख) उत्तेजित (ग) ढाबा (घ) फास्ट फूड
(ङ) विरही

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i)

4. (क) तोत्तो-चान की हार्दिक इच्छा थी कि यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े।
(ख) खरबूजे के विषय में कहा गया है, सच्ची कहना फीके या मीठे।
(ग) उत्तर भारत की 'ढाबा' संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है। अब आप कहीं भी हो उत्तर भारतीय रोटी-दाल-साग आपको मिल ही जाएँगे। उत्तर भारत में जो चीजें गली-मुहल्लों की दुकानों में आम हुआ करती थीं, उन्हें अब खास दुकानों में तलाशा जाता है।
(घ) रसोईघर के लिए आवश्यक सामान पर एक सौ पचास रुपये खर्च अनुमानित किया गया।

❑

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

(अध्याय 11 से 20 तक)

1. (क) (i) पहली (ख) (ii) 10
(ग) (iii) 1985 (घ) (ii) 1857

2. (क) धमा-चौकड़ी (ख) उठाए (ग) 16 (घ) 57
(ङ) चकाचक

3. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (iii)

4. (क) हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं।
(ख) मास्टरजी ने कहा, कुछ नहीं माताजी, मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज ख्याल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा।
(ग) 1857 के विद्रोह के मुख्य नेताओं में नाना साहब, ताँत्या टोपे, बख्त खान, अजीमुल्ला खान, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, कुँवर सिंह, मौलवी अहमदुल्लाह, बहादुर खान और राव तुलाराम थे।
(घ) कारीगर ने भिश्ती की खता बतायी।

❑